गो चा ली

२०४७

गोचाली

अङ्क - ६ वर्ष - २० २०४७ / १९९२

प्रधान सम्पादक

महेश चौधरी

सह-सम्पादक

सगुन लाल चौधरी

लिला "गम्भीर"

मूल्य रू. १०/-

प्रकाशक :– थारू भाषा तथा साहित्य सुधार समिति
पश्चिमाञ्चल नेपाल

छैठौं संस्करण :–

थान – १५००

मुद्रक :– स्वर्गद्वारी प्रेस
दाङ धोराही
फोन नं. ६००८२

सम्पादकीय

यी साल फाल्गुण ६ गते नेपालके प्रगतिशील फाँटह बहुत घाटा सह परल बा। ऊ घाटाहो सह शोषित उत्पीडित जनताके पक्षम लिखना, न्याय एवं स्वतन्त्रताके डगरम न्याङ्गबेर कब्भुके नै डट्कर्ना, प्रतिक्रियावादी हुकन्के सामने कब्भु नै शीर झुकैना कबि श्री युद्ध प्रसाद मिश्रके निधन। फुरसे कनाहो कलसे अल्प संख्यक पूंजीपति वर्गके विरुद्ध बहुसंख्यक श्रमजीवी जनताके हितम लिखना पूंजीवादी - सामन्तव दी जन्जिरले बाँधल जनताके पुरान बिचारह बदल्ना साहित्य सृजना कर्ना कबिके यी निधन हो। हमार 'गोचाली' पत्रिका फे यह डगरप न्याङ्गल पत्रिका रहल वर्से 'गोचाली' कबि श्री मिश्रके निधन प्रति हार्दिक श्रद्धाञ्जली अर्पण करथ।

आज संसारसे साम्यवाद हेरैंटो जाईटा और मार्क्सवाद लेलिनवाद असफल सिद्ध हुईती जाईता कना प्रचार खास कैक रेडियो नेपाल तथा अन्य सरकारी सञ्चार माध्यमसे सुन मिलथ। वहनफे खासकैक समाजवाद व साम्यवादके जन्मजात शत्रु कुछ पश्चिमी पूंजीवादी तथा साम्राज्यवादी मुलुकके लाग त यी सुगा रटाई जो हुईल बा। समाजवादी राष्ट्र हुकनके कमजोरीसे अनुचित फाईदा उठैना सुरस पूँजीवादी तथा साम्राज्यवादी तत्वहुक आपन धोती छुटलक थाहा नै पाईथु-इत। अत्यन्त अमानवीय व चरम पूंजीवादी शोषणसे तहस नहस हुईल आपन समाज व क्रुर साम्राज्यवादी शोषणके कारण विकाशोन्मुख राष्ट्र हुकनम बढ़ती रहल गरीबि व दुःखसास्ती रहल जनजीवनसे यी मानव अधिकार व प्रजातन्त्रके स्वघोषित ठेकेदार हुकनह एक रत्तिफे वास्ता नै हो। बास्तवम कनाहों कलसे आज संसारम मार्क्सबादी - लेलिनवादी समाजवाद बि-भिन्न कठिनाई व अनुभवसे सिख्टी आग्घ बढ़ती बा कलसे एका

धिकार पूंजीवाद पतनके डगरम बा। याकर सहि निसाफत नेपाली जनता एक न एक दिन कर्ने जो बाट।

बर्गीय समाजम साहित्य फेन बर्गीय रहथ। पिछडल जातिके भाषाफे पिछडल रहथ। थारू जातिफे पिछडल रहल वर्से थारु भाषाफे अभिन सम पिछडल अवस्थाम बा। यहा बहुतसे मनै कमैया, कमलहरी, किसान, कम तलब पैना कर्मचारी रहलवर्से हमार समाज गरीब दु:खीन्से भरलबा। 'गोचाली' गरीब - दु:खीन्के पक्षम बोल्ना पत्रिकाहो कना सब जहन थाहा हुईलक हो। हुइनात आज मोरङ, चितवन, नवलपरासी, बाके, कैलाली, दाङ तथा केन्द्रसे दुई थोर कैक जम्मा ११पत्रिका थारु भाषाम आजसम निकर सेकल लेकिन थारु भाषा तथा साहित्यके बिकासम मल जल डरुईया पत्रिका 'गोचाली' पत्रिका जो हो कना बिषयम सायद दुई मत हुई काकरिक २०२८ सालम 'गोचाली' अङ्क १ थारु भाषाम सब्से पहिल प्रकाशन हुईलक पत्रिका हो। यहवर्से हम्र सबज यी पत्रिकाह क्रमश प्रकाशन कर्ति रहबि कना विषयम बिस्वस्त बाटी। यह पत्रिका हो जौन सम्पूर्ण थारू जातिन्ह थारू भाषा तथा साहित्य के विकास कर्ना प्रेरणा देहल। आज यहिह हेर्के सबज आपन आपन क्षेत्रसे थारू भाषाम कित ब प्रकाशन कर्ना ओर लागल बाटी। निकट भबिष्यम हमन थारू शब्दकोश ब्याकरण तैयार कर परलबा तथा बहुत ढेऊर थारू साहित्य सृजना कैक शिक्षण संस्थामफे लेख पढ़के लाग माग कर परल बा। तब मात्र हमार बहुत उद्देश्यमसे एकठोर उद्देश्य पूरा हुईलक हम्र महशुस कबि। यी छैठौअङ्क प्रकाशन करकलाग सहयोग कर्लक सब गोचालीन धन्यवाद तथा नयाँ बर्षके उपलक्षम सब जहन शुभकामना।

धन्यवाद

जय! गोचाली परिवार।

गोचाली परिबार के अपील

आदरणीय सहयोगी गोचाली हुंक्र!

३० बर्षके नम्मा पञ्चायती औंसीके अन्धरीय रात खतम होक प्रजातन्त्रके लौव बिहानके सुरुवात हुईल बा। नेपाली जनताके मुहम लगाईल ताला फेर दोस्र एकपथारा खुलगैल बा। निरंकुश पञ्चायती शासनसे देशके शोषित ओ उत्पीडित जातिके भाषा, साहित्य और जातीय उत्थान बारे अनुदार नीति हुइल वर्से थारु जातिके भाषा, साहित्य और संस्कृति सम्बन्धि ज्या जवा उत्थान कर सेक्ना सम्भावना रह, ऊ फेन सम्भव नै हुइल। आब यी लौव बिहानम हमन झट् पट् उठपर्ना समय आइल बा। काकरकि रातभरके अन्धारम बसेरा लेहल चिरै चुरुङफे चे-चे चु-चु के धुनसे जहोर तहोर बातावरणह गुन्जायमान पर्ले बात सायद हित्रफेन भरखर लन्लक प्रजातन्त्रके उपलक्षम खुसी मनाईत।

हमार देशम हुईलक सामन्ती शोषणके ओरसे बहुतसे गरीब सुकुम्बासी हुक्र पहाडसे तराईप छारा कर्ना ओ मुगलान जाइपर्ना बाध्यता रहल सक् आजसे १९-२० वर्ष पहिल थारू जाति प्रति दाङम हुइलक बर्बर सामन्ती शोषण, थिचो-मिचो अन्याय अत्याचारसे छुटकारा पाईकलाग यहाक बहुतसे नेपाली हुक्र गाउँका गाउँ उठ-उठ छारा कैक बुढ़ानम गैलक घटना अभिनसम हमार बिचम ताजा बा। यह पिर मर्काह, यह दु:ख

दर्दह ब्यक्त करकलाग जन्मल 'गोचाली' पत्रिकाह हम्र २०२८ सालम पश्चिमाञ्चल क्षेत्र (दाङ, बाँके, बर्दिया, कैलाली, कन्चनपुर) से भाषाम एकथोर पत्रिताके रुपम थारु छपाईल रलही। याकर अर्थ यी फे नै हो कि हम्र नेपाली, नेवारी, मैथिली अस्तहक हमार देशके और शोषित भाषा-भाषीके बिरोध कर्थी, हिकनसे हमार एका कायम नै हो कैक। हमन हमार देशके सब भाषासे माया मोह बा औ हमार सम्बन्ध बा। हम्र आपन भावनाह ब्यक्त कर्ना माध्यमके रुपम आपन मातृ भाषा थारु भाषाह रोजलककेल हुई। पिछडल जातिके भाषा फे पिछडल रहल वर्से हम्र आपन भाषाह उठाईकलाग "थारू भाषा तथा साहित्य सुधार समिति पश्चिमाञ्चल नेपाल" के नाऊँसे समिति गठन करल रलही। नाँघ अवस्थाम रहल यी समिति मार्फत पहिल थारू लोकगीत 'माँगर' तब 'गोचाली' पहिला अङ्कह प्रकाशन करल रलही। जस्त सुक विकट परिस्थितिसे जुझकफे या समिति मार्फत आजसम हम्र कैयौथो थारू लोकगीतके सङ्कलन ओ प्रकाशन कर्ति और गोचाली पाँचौं अङ्कसम्म हम्र याकर प्रकाशन कर्ति ऐलि। बन्धनम रहल ऊ पञ्चायती दिनम, उकुस-मुकुसम बाँचल ऊ अवस्थाम फे हम्र कभु खुला रुपमत कभु भूमिगत रुपसे फे 'गोचाली'ह हम्र बचैती ऐलि काकरकि "गोचाली" हमार हितैषीहो कैक गोचाली हमार सहयोगी हो। कैक युगैयुगसे बन्धनम रहल कमैयाके शोषण, अत्याचारम परल किसान, मजदूर, महिलाके, श्रमजीवी शिक्षक, वकिल, डाक्टर और विद्यार्थीन्के बात बतवाईथ। यहीसे छुटकारा पैना डगर देखाईथ। नेपाली राष्ट्रियताके सवाल बिठाईथ। यह वर्से ऊ हमार पत्रिका थारू भाषाम प्रकाशन हुईलसेफे यी सम्पूर्ण शोषित-पीडित जनताके पत्रिका हो कना विषयम सायद दुई मत हुई। बितल दिनन हम्र थारू भाषाकेल नाही हमार देशके विभिन्न भाषा बोल्ना सहयोगी गोचालीन्से प्राप्त हुइलक सहयोगसे यी पत्रिकाके जगह उठाए सेक्लक बातह हम्र नै भुल सेक्बी। कमैया, किसान, मजदूर, विद्यार्थी और बुद्धिजीवीके एक-एक पैसाके सहयोगसे बाँचल यी पत्रिका अभिनसम ढुकुर ढुकुर सास लेतिबा। अभिनसम प्राणकेल लेक बाँचल गोचालीह फेनदोस उठाइकलाग हम्र एकजुट हो रलि। प्रगतिशील साहित्यके सृजना कैक थारू जातीम चेतना जगैना उद्देश्यसे हम्र आग बढ़ल बाटी। जातीय भावनासे ग्रसीत नै होक बर्गीय हितह हम्र ध्यान देल बाटी। धनी ओ गरीबके बीचके फरकसे हम्र गरीब होक बाँचल बाटी शोषण, अन्याय, अत्याचारके विरोध कर्ना और यहीसे मुक्ती दिलैना समूहप्रति हम्र समान आस्था और विश्वास रख्थी। जन्तन्ह जगैना, जन्तन्ह उठैना और जन्तन्म चेतना फैलैना खालके खोजपूर्ण रचनाके हम्र सहमर हृदयसे स्वागत कर्थि और सहयोगकेफे आशा रख्थी। हमन आपन बहुमूल्य सहयोग तथा सुझाव देक "गोचाली" आगामी अङ्कह प्रकाशन करकलाग आपन यथासक्य सहयोग कर्बिकना हम्र सब आपन हितैषीन्से अनुरोध कर्थि और यहा हुकन्के अमूल्य सुझाव तथा सहयोग के लाग धन्यवाद देथि।

गोचाली परिवार

पश्चिमाञ्चल, नेपाल

२०४७/२/३०

बिषय – सूचि

क्र. सं.	बिषय	नाम	पेज
१–	शुभ कामना		१-१
२–	खैतीबा	हरि प्रसाद चौधरी	२-३
३–	शहिद मोहन बहादुर चौधरी के छोटकरी जीवन परिचय	वि. के चौधरी	४-६
४–	मै नै सहम	सी. बी गोची	७-७
५–	नै हो एको सुख	नरेश गोचाली	८-८
६–	हमार देशम थारू भाषा बोल्ना मनैनके अवस्था	महेश चौधरी	९ १९
७–	खेतवा जोतेरे किसानवा	साभार जनसाँकृतिक मञ्च मधेली,सुनसरी	२०-२०
८–	हम सब सामन्ती व्यवस्थाके हतावेके पर्ते	,, ,, ,,	२१-२१
८–	रोटीक बत्कोही	अनु. श्रीमती शान्ति चौधरी	२२-२३
१०–	प्रतीज्ञा	टेक बहादुर चौधरी	२४-५८
११–	जागो रै किसानवा	मंगल चौधरी	५९ ५९
१२	आब आ गैल	महेश चौधरी	६०-६०

शुभ–कामना

गोचाली के उत्थानह साथदेना गोची हुकन
हमार शुभ-कामना !

अन्याय के विरूद्धम न्याय के आवाज घन्काइक लाग
जीवनहन संघर्षम लगादेना गोची हुकन
हमार शुभ-कामना !!

शोषक के पर्दा चिरक, समाज सुधार करक लाग
जनता के भलाई लेक आग बढना गोची हुकन
हमार शुभ-कामना !!!

पुरान कुरिती छोडक विज्ञान के डगरिम लाग्क
जनतन्त्र युगके निर्माण कर्ना गोची हुकन
हमार शुभ-कामना !!!!

हरि प्रसाद चौधरी
मटीयारी, कैलाली

खैतीबा

जोड बितौड के मुर्गी पल्बो ।
टोक्टा ढुर्रक निहु परबो ॥
लडका–पडकन के मुह मरबो ।
एक दुई पैसा जोरक् खाजबो ॥

अध्यक हक ते मोरिक बा ।
नान् एकथो मोर पहुना बा ॥
डकल्या - डकल्या झडती बा ।
शोषक जीऊ मोर खैती बा ॥

कुट पिसके देबो – देबो ।
भन्सा खैलक भाँडा भिस्बो ॥
गोवर पानीमे हाथ सडैबो ।
आधा रातके छुट्टी पैबो ॥

जन्नी देख्बो डट्करल बा ।
चिश्री लागल लुगरा बा
खैना बासी माँड बा ।
शोषक जिऊ मोर खैती बा ॥

सुत्बो फाटल गोन्द्री पर ।
पेट तरसो भोजन पर ॥
मन तरसो बाल बच्चन पर ।
शरीर तरसी जुडी बुखार पर ॥

इलाजके जरूरत बा ।
उपर से फटकार बा ॥
नाकरो ते हर्जावन बा ।
शोषक जिऊ मोर खैती बा ॥

हरवाही लागल कमैया पर ।
घर बिहीन सुकुम्बासी पर ॥
नेपालके वीर किसान पर ।
इश्वर के सच्चा सन्तान पर ॥

शिर पर ऋण के पहाड बा ।
भागु ते देश के माया बा ॥
ऐसिन ते यहाँ हाल बा ।
शोषक जिऊ मोर खैती बा ॥

कबतक सोचम झन्खती रहबो ।
मनै होके बिकल रहबो ॥
ई गाऊँ उ गाऊँ छारा करबो ।
ठेगान आपन खोजतो रहबो ॥

आब ते सकारे हुइल बा ।
आँख खोलके हेर्ना बा ॥
दिन सबके बदल्ना बा ।
नाही ते शोषक जिऊ मोर खैने बा ॥

"शहिद मोहन वहादुर चौधरी के छोटकरी क्रान्तीकारी जीवन परिचय"

गाउँले स्तरम, भरखरके जवान युवक, वर्षादके समयम खेती कैना किसान, युवक मा. वि. जोगी गाउँके नि.मा.वि. पास कैक म.क.दे.व्या.मा.वि. मथुरा हरिद्वार, वर्दियाम एस० एल० सी० स्तरम अध्ययनरत अ० ने० रा० स्व० वि० यु० जि० स० वर्दियाके सक्रिय कार्यकर्ता शहिद मोहन वहादुर चौधरी हुइत। हुकाहार जन्म जि० वर्दिया गा. प. धधवार वा. नं ८ फचकहवाम वि. सं. २०१८ सालम हुइलकहो। उहाँके संयुक्त परिवारम दाई-बाबा, बराबाबा, दादु, भौजी भैयन समेत ४०/४५ जनाके परिवार रहल ब्यालाफेन सबसे बढी मैया उहाँ पैलक रलह काकरकी थारू जातीन्के सयुक्त परिवारम सब जहन नै पढाक एक दुई जहन केल पढैना चलन आज फेन चलती बात।

शहिद मोहन वहादुर चौधरीके परिवार निम्न मध्यम बर्गीय किसानके रुपम मान सेक जैठा काकरकी उहाँके पुर्खनके करीब ११ विगाहा आपन दर्तावाला जग्गा व करीब १६ विगाहा मोहीयानी किसिमके जग्गा जोतत्। गाउँके सामन्तीन से लम्वा समय सम्म मुद्दा मामिलाके साथ - साथ वाली रोका-रोक कर्ना आदि किसिमके संघर्ष वहुत पाली चल्लक वर्से व प्रशासन पैसाके भरम गरीब किसान जब फेन हरैलक वर्से निरास, उत्पीडिय व आक्रोसित परिवार हो उहाँके।

सामन्ती अवशेष हुईलक गाउँ ठाउँके किसान हुँक्र शोषित पीडित हुइना स्वाभाविक हो। तमाम किसिमके शोषण थिचो-मिचोसे मुक्ती (छुटकारा) पाइकलाग शोषित पीडित जन्ता हुँक्र मौका खोज्ती रथ। हमार भलाईके करी ? हम्रहीन मदत्र करुई-याके बात। कसिक कर्लसे शोषक सामन्तीनसे जीत सेकबी व आपन कमाही अप्न खाई पैबी कना सब मेहनत कैक खैना जनता सोचती रहना स्वाभाविक हो। कुई डगर देखैना व संगठन कैना, सबजान मिलके फटाहत्र शोषकन से छुटकारा पैना उपाय करी कना सुन्तोकी जोस जाँगर लेके उठ पर्ना किसानके स्वभाव रहथिन। खास कैक युबक किसान हुकनम यो गुण बढी पाजैठा।

२०३६ सालके नेपालम हुइलक जन आन्दोलनके समय शहिद मोहन चौधरी भरखरके युबक रलह। जौन ठाउँम विद्यार्थी आन्दोलन चल, उ ठाउँम अग्रिम पङ्तीम भाग लिहत। जौन ठाउँम किसान आन्दोलन चल उहाँ फेन किसान बन्के जनतन्के साथम संघर्ष कर आघ बढत। मेहनत कैक खैना जनतनके पक्षम जहाँ, जब, जसिक फेंन पुग जैना ब सामन्तीन, शोषकनके विरोध कैना उहाँके क्रान्तीकारी स्वभाव रहीन। २०३६ साल ३१ गते किसानके साथम आन्दोलनम भाग लेहल ब्याला एक जान शोषक (उ समय वडा समितिके पञ्च सदस्य ज्याकर विरोधम आन्दोलित किसान रलह) रू. ५०/- के ५०००/- पाँच हजार बना-बनाके तमाम किसानन् आपन पञ्जम फसैल रह) के हाथसे छुटलक बन्दुकके गोलीसे शहिद बनलक हुइत हमार जोसिला मोहन चौधरी।

मनै जमंठ कलसे एक दिन मुठ। संसारम आज सम्म जत्रा जर्मल सब जान मुके गैल। तर जे शोषकके विरुद्ध अन्याय अत्याचारके विरुद्ध लडके मुल हुक्र कब्भुकेंन नै मुना कैक अमर होक गैल। हम्र फेन एक दिन मुअपरी तर कुछ असल काम

कैंक मुअ परठ कना शहिद मोहन जो से शिक्षा लिह पर्नाँ वा।

शोषकनके पक्षम लागके तमाम जन्तनहन सतैना, अन्यायम परलम फेन सहती जैना त जित्तोह मुअल जसिन ही। उह वर्से शहिद मोहन जैसिन संघर्ष करती-करती ज्यानके बाजी लगाए सेकना ज्ञ न हम्र सब जान सिख परल बात। हुइना त मुअ परथ कैंक पानीम कुद नै हुइल, रुखवनमसे फन्क नैं हुइल। वास्तविक बात काहो कलसे जनतनके पक्ष लेक शोषण, अन्याय अत्याचार, जाली फटाहाके विरुद्ध संघर्ष करती-करती मुअ परठा कलसे हम्र कुछ परवाह नैं कैंक जीवन वलीदान कर्नाम पाछ नैं हट परथ।

अस्तु

परिचय कर्ता बि. के. "गोबाली"

सो. बी. गोची
(वदिया)

"मै नै सहम"

मै त नै सहम शोषकके अत्याचार
हम्र लडक लाग हुइ गोची तयार
शोषकके घरम जाक अनाज लिहवेर
दुई चार लम्वर नापके भिर्थ दाँटी मार
मै त नै सहमा शोषकके अत्याचार
हम्र लडक लाग हुई ... ... ।

जुवा खेलक घरबार वस्त हूँ बहैठ
दस विस रुपीयाँ माँगवेर जोरसे रिसैथ
मै त नै सहम शोषकके अत्याचार
हम्र लडक लाग हुई ... ... ॥

पढ देव दाई बाबा जत्रा ऋण लागि
नियम कानून बुझ सेकवी गरीवनके लागि
मै त नै सहम शोषकके अत्याचार
हम्र लडक लाग हुइ ... ... ।।।

धनिके छाई छावा खैठ पिठ मस्ती उरैठ
गरीबनके गति नैहो जीउह दुःख देठ
मै त नै सहम शोषकके अत्याचार
हम्र लडक लाग हुई ... ... ।।।।

कबु कन्जुवा कबु कप्वा संग आटो खैठु
और काम नै पैतु भरुवा बोक मै जैठु
म त नै सहम शोषकके अत्याचार
हम्र लडक लाग हुई ... ... ।।।।।

आटो-पिठो ओरा गैल कहाँ पैना हो जाउली
भित्तर जाक हेर वेर घोप्ट्चाइल रठा ताउली
मै त नै सहम शोषकके अत्याचार
हम्र लडक लाग हुई गोची तयार ।।।।।।

नरेश गोचाली
(वर्दिया)

"नै हो एको सुख"

सामन्ती के काम कैक जीवन गैल
जीवन भर एको नै सुख हुईल
नै हो2 एको सुख बचना2 कैसिक हो।
छोटीमसे जिम्दरुवक घरम
जीवन मैल जिम्दरुवक घरम
नै हो2 एको सुख बचना2 कैसिक हो।
बाबा, बुबा सामन्तीके ऋणम
मैं त पर्नु ऋणके सिनम
नै हो2 एको सुख बचना2 कैसिक हो।
सदभर सामन्तीके चाकरी
कैसिक बिताउँ यी स्वार नोकरी
नै हो2 एको सुख बचना2 कैसिक हो।
छावा-छाई छोटीसे दाश बन्थ
जीवन कटना सदभर दिन गन्थ
नै हो2 एको सुख बचना2 कैसिक हो।
लडका पडकन पढैना ठाउँ नै हो।
नै हो2 एको सुख बचना2 कैसिक हो।
छावा मुअल दवाई नै कैख
दवाई कर्ना एक पैसा नै होक
नै हो2 एको सुख बचना कैसिक हो।
ऋण लेनु एक समयके बातम
तमसुक बनाईल थकके हजारम
नै हो2 एको सुख बचना2 कैसिक हो।
आब मै बनी यी दुःखह सहब
आग बढी एक जुट होक
शोषक2 मासक लाग हक लिहक लाग
क्रान्तीकारी आपन हक लिहक लाग
मनै होक मनै अस बाँचक लाग
नै हो2 एको सुख बचना2 कैसिक हो।

हमार देशम थारु भाषा बोल्ना मनैनके अवस्था

महेश चौधरी
बैंवाङ (दाङ)

[यी लेख आजसे करीव ५ वर्ष पहिल रुपन्देही जिल्लाम सम्पन्न हुइलक थारू क.का.स. के केन्द्रिय महा अधिवेशनम बाट-गैल लेखहो। २०२८ सालके जनगणनाके आधारम तैयार करल यी लेखके शिर्षक बहुसंख्यक थारु जातिको भाषा अल्पसंख्यक रुपमा" रह। प्रस्तुत यी लेखम २०३८ सालके जनगणनाह समेत समावेश कै गैल बा] सम्पादक

भाषा साँस्कृतिके एक्थो पक्ष हो। भाषा आपन भावना व क्तकर्ना एक्थो माध्यम हो। यक्रहे आधारसे हम्र आपन विचार भावनाह कैंयौ किसिमसे व्यक्त कर सेक्थी–जस्त हाँउ-भाँउ देखाक, चित्र फोटो, अक्षरसे और आवाज निकारक। तफे यी सब साधनके उपयोग कर्नासे वात बतोईना बढो भरपर्ना और सजिलो रहथ। यह वसे कैंयौ भाषा समुदाय-हुक्न्के आपन छुट्ट भाषा रथन। हिकन्के एक्क किसिमके बोल्ना चिन्ह रथन। कौनोफे भाषा भाषिके मनै आपन सस्कृतिह एक पिढीसे द्वासर पिढीम बदलबेर यक्रहे सहारा लेथ।

भाषा आपन विचार व्यक्तकर्ना माध्यम केल नैं हो, बेन यी त साहित्यके फेंन एक्थो माध्यम हो। कौनो फेन देश तथा जातिके साहित्य ऊ देश तथा जातिके सस्कृति व सभ्यताह

बचैल रहथ। वहवर्से भाषाके महत्व मानवीय सभ्यताके बिकासम सबसे बरा रहथ। बिश्वके बहुतसे साहित्य व पुरान सभ्यता लोप हो गैल बा। आजके नृतत्व शास्त्री ओ भाषा शास्त्रीहुक्र आदिम जनजातिन्के भाषा तथा सभ्यताह असिक लोप हुइनासे बचैना अनेकौ प्रयास करल बात।

नेपाल क्षेत्रफलम छोटी मुलुक रलसे फे याकर धरातलम हुरुपता हुइल वर्से यहाँ अनादि कालसे वातावरण अनुसार फरक - फरक प्रदेशम फरक - फरक अनुहार, रहन, सहन, भेष - भुषा व भाषा - भाषी रहल मनैनके बसोबास रहल पाजाईथ। थारू जाति अनादि कालसे जङ्गली जनावर बाघ हाथी, भाल, साँप और अनेक प्राकृतिक कष्ट सहक विकट औलसे जुझ्ती पूर्व मेचीसे पश्चिम महाकाली सम तराई ओ भित्री मदेशके घनघोर वन्वह फाँरक देशके यी भागह बहुत मलगलकेल नाही नेपालके अनाजके बखारीम बदलना गौरव थारू समुदायह मिलल बा। थारूहुकनके आपन छुट्ट भाषा, सस्कृति व आपन जातीय इतिहास हुईल वर्से आजसम यो एक्थो थारू जातिके नाउँसे चिनजाइथ। थारु जाति नेपालमकेल बैठल नै हुइट बल्की थारु हुक्र नेपाल - भारत सीमाना क्षेत्रम पूर्व जलपाई गुडोसे पश्चिम कुमाउँ भाँवरसम बसोबास करल पाजाइथ।

ठाउँके आधारम हम्र बहुतसे भाषाह चिन्थी। संसारके विभिन्न जातिहुक्र विभिन्न भाषा ब्वालल हम्र पैथी। ओ संसारके भाषाके नाउँफ जातिके नउँसे सम्वन्ध रहल पाजाइथ। थारु भाषाके नाउँफेन अस्तह रहल हो।

सम्वत २००८/११ म लेहल जनगणना अनुसार हमार देशके कुल जनसख्या ८२,५६,६२५ म से थारु भाषा बोलना

संख्या ३,५९,६०० रह। अस्तहक २०१८ म कुल जनसंख्या ९४,१२,९९६ म से थारू भाँषा बोलना मनैनके संख्या ४,०६,९०७ रह। २०२८ म कुल जनसंख्या १,१५,५५,९८३ रहबेर ४,९५,८८१ जन थारु भाषाह आपन मातृ भाषाके रुपम प्रयोग करल पागैल बा। अस्तहक २०३८ सालम लेहल जनगणना अनुसार कुल जनसंख्या १,५०,२२,८३९ म से थारू भाषा बोलना संख्या ५,४५,६८५ बात। हमार देशम भाषाके दृष्टिकोणसे २०१८ सालके जनगणनाम थारू भाषाके चौथा स्थान रह कलसे२०२८ सालके जनगणना अनुसार पाँचौ स्थान व्हाए गैल। २०३८ सालके जनगणनाम फेन दोस्र याकर स्थान चौथाम रह गैल। २०१८ सालके दाजोम २०२८ व २०३८ सालके जनगणनाम थारू भाषा बोलना संख्या बढल देखापर्लसे फे अन्य भाषा भाषी हुवन्के वृद्धके दाजोम यी वृद्धि कमजो हो। यी हुइना कारण थारु जातिम आपन भाषा प्रति आस्था घट्ती जाक आपन मातृ भाषाके रुपम मैथिली, भोजपुरी, अवधिके रुमम स्वीकार कर्ना व देश बाहर(भारत)से मैथिली, भोजपुरी, बोल्ना बहुतसे मनै छारा कैक आईलवर्से फे हुईस्यावथ। प्राचीन समयम थारु भाषाह आपन स्वर, ध्वनि व शब्द रहल वर्से अलग अस्तित्वम रहल भाषाके वल्वना कर्लसेफे आज यहम विभिन्न भाषाके प्रभाव रहल पाजाइथ। जस्त पूर्वी नेपालके थारु भाषाम मैथिली मध्य नेपालके थारु भाषाम भोजपुरी और पश्चिमी नेपालके थारु भाषाम अवधि भाषाके प्रभाव रहल पागैल बा। कौनो कौनो जिल्लाके थारु भाषा जोऊ क्षेत्रम बोलना विकसीत भाषाम प्राय: विलय हो गैल बा। यी बातह २०२८ सालम लेहल भाषा - भाषीके ताल्गीकासे प्रष्ट हुईने बा।

जिल्ला	कुल जनसंख्या	मैथिली भाषा	भोजपुरी	अवधि भाषा	थारू भाषा
१ झापा	२४७६९८	२९८१	६५	६७	२५१८
२ मोरङ्ग	३०१५५७	५३८९३	१२६०	२	३५६४०
३ सुनसरी	२२३४३४	५१०३५	३६३	१०६७०	५६७३१
४ उदयपुर	११२६२२	१५०३४	—	—	३
५ सप्तरी	३१२५६५	२८९५५१	१९	६९	५
६ सिराहा	३०२३०४	२७०४२८	३६	४	१७
७ धनुषा	३३०६०१	२८४७०७	३५०	९	९
८ महोत्तरी	३२४८३१	२८४४३७	५०	५२१	१९०
९ सर्लाही	१७५५४३	६१४२०	१८७	३१	४०६
१० रौतहट	३२००९३	८६२५	२८२३१४	५	२५८
११ बारा	२३३४०१	३२९	२१५९४०	१९	७१८
१२ पर्सा	२०२१२३	१०९७	१८५७०५	९३	११०
१३ चितवन	१८३६४४	२४	२४८	—	२४७१८
१४ नवल्परासो	१४६५४८	३६५	१३९९३	३५६२६	३६९२८
१५ रुपन्देही	२४३३४६	१४५	१०४६६१	७०४४०	७५१०
१६ कपिल्वस्तु	२०५२१६	८२	१३	१६४५५५	२१९६४
१७ दा देउखुरी	१६७८२०	४०	४९	१२८१	७२४७५
१८ सुर्खेत	१०४९३३	२०	—	—	२१७२
१९ बाँके	१२५७०९	१२४	२७३	३७९९६	२२१२१
२० बर्दिया	१०१७९३	३०	८०	३३२२	७७४६९
२१ कैलाली	१२८८७७	६०	५१	११७	१०३९३९
२२ कन्चनपुर	६८८६३	३०	७	४७	२९४५२

Source : Central Bureau of statistics H. M. G. of Nepal 1971 Census (२०२८)

यो तालिका का देखाईथ कलसे थारू भाषा भाषिन्के सबसे बढी रहल जिल्ला कैलाली हो। २०२८ सालके जनगणनाम दाङ्ग देउखुरी जिल्लाके प्रथम स्थान रह। लेकि २०२३/२४ सालम बहुतसे मनें दाङसे बुढान वर छारा करल वर्से कैलालीम यी भाषा - भाषिन्के संख्या सबसे धेर देख परल हो। अन्य जिल्लाम क्रमशः बर्दिया, दाङ्ग, सुनसरी, मोरङ, कन्चनपुर, चितवन, नवलपरासो और कपिलवस्तु हो। दुःख लग्ना बात का बा कि तालिकाम थारू भाषा बोल्ना संख्या उदयपुर जिल्लाम ३; सप्तरीम ५; धनुषाम ९; और सिराहाम जम्मा १७ रहल देख जाईथ। अस्तहक थारुहुक रहल जिल्ला महोत्तरी, रौतहट बारा; पर्सा जिल्लाम फे तुलनागत रुपम यी संख्या कम जो हो। उदयपुर जिल्लाम थारु जातिके संख्या ३०,००० बा लेकिन थारु भाषा बोल्ना सख्या जनगणनाम जम्मा ३ केल देखाईल बा[1]। सप्तरी जिल्लाम यादव व थारु बहुसंख्यक जाति बात। यी दुईठो जाति कुल जनसंख्याके ५०% बाट[2]। लेकिन तालिकाम यी संख्या जम्ला ५ केल बा। अस्तह सिराहा जिल्लाके थारु भाषा फे लोप हुइल बा। बारा जिल्लाम थारुहुक्के संख्या ४५,००० जत्रा हुइना अनुमान करलम जम्मा ७१८ केल देखाईल बा। जौन बहुत थोर संख्या हो[3], सर्लाही जिल्लाम थारु भाषा बोल्ना मनैनके संख्या ४०६ रलसेफें यहाँ थारुहुक पहिलसे बसोबास कर्ति आईल वर्से स्थानीय अथवा मैथिलीके जो प्रयोग कर लागल बाट[4]। तालिकाम मैथिली भाषा बोल्ना सख्या बढी रहल जिल्ला सप्तरी हो। ओर जिल्लाम क्रमश धनुषा, महोत्तरी,

१) मेची देखि महाकाली भाग – १ पेज ७७८
२) ऐ. ऐ. ऐ. – ऐ ७७८
३) ऐ. ऐ. ऐ ऐ. ११०२

सिराहा, सलाँही, मोरङ्ग, सुनसरी, रौतहट, उदयपुर व झापाके बा। यह वर्से यी क्षेत्रके थारु भाषाम मैथिली भाषाके प्रभाव रहल देखजाईथ। अस्तहक भोजपुरी भाषा बोलना सख्या रहल जिल्ला क्रमशः रौतहट, बारा, पर्सा, रुपन्देही व नवलपरासी जो हो। यी क्षेत्रके थारु भाषाम भोजपुरीके प्रभाव रहल देखजाईथ। यी क्षेत्रम भोजपुरी भाषाके दाजोम मैथिली भाषाके प्रभाव कम जो बा। अस्तहक अवधि भाषा बोलना मनैनके जिल्ला क्रमशः कपिलवस्तु, रुपन्देही, बाँके, नवलपरासी; वर्दिया; सुनसरी व दाङ्ग हो। दाङ्ग देउखुरी जिल्लाके थारु भाषाम भारतीय भाषाके प्रभाव फे बहुत रहल देखजाईथ। खासकैक यी प्रभाव देउखुरीके थारु भाषाम परल बात।..... दाङ्गके थारु भाषाम प्राकृत भाषाके शब्द फे प्रशस्त पाजाईथ। जस्त बहु - अरीया=बहोरीया, अग्गी=आगी। आदि। नेपाली भाषामसे लोप हुईत भिरल[5] कुछ पुरान[2] शब्द यी भाषाम अभिन सुरक्षित बा।

दाङ्ग देउखुरीसे थारुहुक छारा करल प्रमाण कपिलवस्तु व रुपन्देहीम फे पाजाइथ। अस्तहक बाँके, वर्दिया, कैलाली, कन्चनपुर व सुर्खेतम फे पाजाईथ। यहवर्से हमन शंका लागथ, कहोरी थारुहुकन्के मूल घर दाङ्ग त नै हो? काकर कि दाङ्गम नव पाषाण युगके (पत्थर युग) कुछ पुरातात्विक महत्वके वस्तु पाइल वर्से यी भेगम पाषाण युगसे बसोबास हुईल देखजाईथ[6] लेकिन दाङ्गके थारु भाषा अन्य भाषाके प्रभावसे बन्चित बाट कह खोज्लक फे नै हो। दाङ्ग राज्यके सब्से उर्वर व समथर जग्गा तुल्सीपुर अवध नवाब हुकन्के अधिनम रह[7]। यह

४) मेची देखि महाकाली, भाग – २ पेज ११०२
५ ए. भाग – ४ पेज २५१

वर्से यहाँके भाषाम अवधी भाषाके प्रभाव कुछ मात्रामा देखजाईथ।

२०३८ सालम लेहल जनगणना अनुसार तराई व भित्री मधेशके जिल्लाम थारु भाषा मातृ भाषाके रुपम बोलना सख्या निम्न बा।

२०३८ सालके जनगणना तालिका

जिल्ला	कुल जनसख्या	मैथिली	भोजपुरी	अवधि	थारू
१ झापा	४७९७४३	१११८३	९७६	३६	१४६१
२ मोरङ्ग	५३४६९२	१०२६०६	३१२०	५७	३३७७२
३ सुनसरी	३४४५९४	१०२१७६	३०६८	१६०	४४७०४
४ उदयपुर	१५९८०५	३९८९	३५	२१	११३४१
५ सप्तरी	३७९०५५	२७५४०६	२२०	६२	३५५११
६ सिराहा	३७५३५८	२६६८०९	२२७	१३	३५४१
७ धनुषा	४३२५६९	३७२५१५	२८४८	८	३३
८ महोत्तरी	३६१०५४	२६८६५४	४९९१	१७	११४४
९ सलाँही	३९८७६६	१४३७०८	१३५६२९	८३	७९४१
१० रौतहट	३३२५२६	१४८७२	२१३०८५	२५	६३३७
११ बारा	३१८९५५	११३५	२५५७४७	१४	१६३५६

६) Banergee, N. R. & Sharma T. L. - Map Tools from Nepal & Sikkim, Ancient Nepal. No. IX PP 53 – 58

७) Hamilton, F. B. – An Account of the Kingdom of Nepal, Edinburgh 1891 P. 278

जिल्ला	कुल जनसंख्या	मैथिली	भोजपुरी	अवधी	थारू
१२ पर्सा	२८४३३८	९१६५	१६५०७२	३७	२४६
१३ चितवन	२५९५७१	६१५	९५०	३९	३११७९
१४ नवलपरासी	३०८८२८	११२९	९७६२२	६०	१५७१०
१५ रुपन्देही	३७९०९६	१६६७	२४७५८८	९	४८२
१६ कपिल्वस्तु	२७००४५	२२२१	९४९	१७१०१२	१३४३१
१७ दा.देउखुरी	२६६३९३	४६६	९३	३२६	८४०६१
१८ बाँके	२०५३२३	८९५९	१९०	५९९०३	१७५१९
१९ बर्दिया	१९९०४४	१३६४	६५	१०६९	७३८७६
२० सुर्खेत	१६६१९६	४२८	३१	४	१६१०
२१ कैलाली	२५७९०४	८६६	२२	४५	१२०५३४
२२ कन्चनपुर	१६८९७१	१२७६	३३	४६	२२३६९

Source :- Population Cansus 1981
Social charasteristic tables
Vol I Part III Nepal

२०३८ सालके जनगणनाके आधारम फे थारु भाषा सब्से बढी वोल्ना सख्या हुइलक जिल्ला कैलाली जो बा, दोस्रा स्थान दाङके, तेस्रा वर्दिया, चौथा सुनसरी, पाँचौ सप्तरी व छठवा चितवनके बा। यी तालिकाम बहुत गजबके बात त का बा कलसे २०२८ सालम मैथिली भाषा सबसे वढी बोल्ना संख्या हुइल जिल्ला सप्तरी रह कलसे २०३८ सालम धनुषा हव्वाए आइल। २०२८ सालम भोजपुरी भाषा सबसे वढी बोल्ना

जिल्ला रौतहट रह कलसे २०३८ म वारा व्हाए आइल। अस्तहक २०२८ सालके जनगणनाम उदयपुर जिल्लाम थारु भाषा बोल्ना संख्या जम्मा ३ रह कलसे यी संख्या २०३८ सालके जनगणनाम ११,३४१ व्हाए आइल बा। अस्तहक २०२८ म सप्तरीम थारु भाषा बोल्ना संख्या ५ रहलम २०३८ म यी संख्या अत्यधिक मात्राम बृद्धि होक ३५,५११ हुइल बा। यी बृद्धि हुइनाके खास कारण एक त सर्व प्रथम २०२८ सालम दाडसे 'गोंचाली' पत्रिका के प्रकाशन पाछ विभिन्न जिल्लासे थारु भाषाम पत्र-पत्रिका, किताव प्रकाशन हुइल वर्से थारु भाषा प्रति प्रेम बढती गैंलक हो। और कारण जनगणना लेहेवेर त्रुटो फेन हुइस्याकथ।

अस्तहक नयाँ जनगणनाम थारु भाषा बोल्ना संख्याम बृद्धि हुइल जिल्ला उदयपुर, बारा, रौतहट व सिराहा हो। लेकिन दु खके बात नवलपरासी व कपिलवस्तु जिल्लाम २०२८ के तुलनाम ३०३८ म थारु मातृ भाषाके रुपम बाल्ना संख्या कम बा। यहाँके थारु भाषा - भोजपुरी भाषाम विलय हुइना स्थितिम बा।

यी भाषाम फरक ऐना कारणम सबसे बढो असर भौगोलिक बनावट ले हो। पहिले[2] यातायात व संचारके अभावके कारणसे यी भाषाम बिभिन्न भाषाके आगमन हुइल बा। कौनो भाषीक समाजके सदस्य हुकनके आपसम सम्पर्क कम हुईति गैंलसे ऊ भाषाके क्षेत्रीयताम फरक ऐति जैना स्वाभाविक हो। यी भाषा मैथिली, भोजपुरी, व अवधी भाषाके ध्वनि, ध्वनि समूह, वर्ण संयोग, अक्षर; शव्द रुप, वाक्य विन्यास आदि विभिन्न आगन्तुक तत्व आइल पाजाइथ। हुत्र निभिन्न भषाके आगन्तुक तत्वह स्तरीयताके निर्वाह व आवश्याकता पूर्तिके लाग यी

भाषाम ल्यानल हो । हुइना त संसारम कौनो फेन भाष ऐसिन नै हो जेहिम कौनो न कौनो भाषाके आगन्तुक शब्द नै रहल हुई । भाषिक तत्व हुकनके आगमन हुईतिम कौनो फेन भाषा बिटुलो नै हूईत लेकिन ऐसिनके प्रवेश व दुई भाषाके सम्पर्कसे एकथोर छुट्ट भाषिक स्थितिके सृष्टि करथ । दुई - भाषिके सम्पर्क हूईलसे कौनो भाषा बोल्ना जाति और भाषासे प्रभावित होक आपन भाषाके रुपहजो बिगारथ । सक्कु भाषा कालक्रमसे विकसित हुइति ऐलक हो व (कृत्रिम भाषा बाहेक) कौनो फे भाषा मनैनके बनाइल नै हो । सक्कु भाषा वर्षौं वर्षसे परिवर्तित हुइती आईल हो । हमन हमर जीवन कालम भाषाम हुइल ऐसिन परिवर्तन बारे बत्रा थाहा नै हुइतन । नेपाली भाषा सक्क थारु भाषाम फ विभिन्न आगन्तुक तत्व आईल बा और थारु भाषा फेन ठाऊं अनुसार फरक फरक बा । यह वर्से पूर्वी नेपालके थारु भाषाह हेर्के और भाषा भाषी हुक्र थारु भाषा अलग भाषा नै हो कना धारणा रख्थ । थारु भाषा कलक मैथिली, भोजपुरी अवधी भाषा हो कथ । हुक्र थारु भाषाके अस्तित्वह स्वीकार कर्ना पक्षम नै हुइत । सदभावना पार्टीके नेता श्री गजेन्द्र नारायण सिंह क्षन तराईके मातृभाषा हिन्दी होकैक थारु भाषाके अस्तित्वह म्याट ख्वाजल बाट ।

थारु भाषाम और भाषाके प्रभाव पर्लसेफे बढ़ी मात्राम मौलिकता फे पाजाईथ । अत्र हो - कौनो क्षेत्रम कम परल बा करसे कौनोम धेर । देश ब्यापी रुपम औलो उन्मुलन कार्यक्रम लागु हुइन से पहिल औलोके घर मानजैना चितवन व दाङ व सुनसरीके थारु भाषम तुलनागत रुपम उत्तर व दखिनके प्रभाव कम देखजाईथ । ठाउँ अनुसार थारु भाषाम ज्या जसिन प्रभाव रलसे फे यी छुट्ट थारु भाषा रह कना बिषयम सायद

८) बाल कृष्ण पोखरेल राष्ट्र भाषा पेज नं. ८७

दुई मत हुई लेकिन विवादके विषय का बा कससे हम्र कौन क्षेत्रके व कसिन थारु भाषाह मौलिक थारु भाषा मन्न ? जुम्ला जिल्लाके सिञ्जा कना ठाउँके भाषा विकास होक्र आज राष्ट्र भाषा नेपाली बन स्याकथ कलसे थारु भाषके विकास फेन का अस्तह नै हुई स्यकि ? यी भाषाह लोप हुइनासे बचाइकलाग थारु जातिम आपन भाषा प्रति चाख जगाए, थारु जातिम विद्यमान थारु लोक साहित्यह प्रकाशन कर्ना व यह भाषाम किताव, पत्र-पत्रिकाके प्रकाशन कर्ना वर हमार ध्यान जैना आवश्यक बा । यी भाषाके विकासम श्री ५ के सरकारके ध्यान गैलसे यी भाषा फे विकास कर्ना क्षन बढ़ी मौका पैने रह यदि हमार देशके सब थारु भाईबन्धुहुक्र थारु भाषाह आपन मातृ भाषाके रुपम स्वीकार कर्ना हो कलसे मैथिली, भोजपुरी व अवधी भाषा - भाषीन्के संख्याम कटौती होक भाषागत रुपम थारु भषाके दोस्रा अथवा तेस्रा स्थान रहना सम्भावना बा यह वर्से हमार देशम बहुसंख्यक थारु जाति रलसेफे यी भाषा अल्प संख्यक रुपम हुईपर्ना कारण पिछडल जातिके आपन भाषाह चिन्ह नै सेक्क आपन भाषाके अस्तित्व जो बिसराक और भाषा प्रति मोह रखना स्थित हो ।

हमार भाषा फेन शोषित अवस्थाम बा । हम्र बहुसख्याक थारु जाति शोषित अवस्थाम बा त वहवर्से हमार भाषा फेन शोषित अवस्थाम बा । यहिसे छुटकारा पाईकलाग जातिय उत्थान हुईना आवश्यक बा । वहवर्से लेनिन कथ सामन्ती जुवाह सम्पूर्ण जातिय दमनह व कौनो विशेष जाति या भाषासे उपभोग कर्ति रहल विशेषाधिकारह खतम कर्ना एकथोर जनतान्त्रिक शक्तिके हैंसियतसे सर्वहारा वर्गके परम कर्तव्य हो ।

—समाप्त—

खेतवा जोते रे किसनवा

जनसाँस्कृतिक मञ्च सुनसरी मधेली से प्राप्त हुइलक तीन थोर गीत यहा क एक थारू किसान गोची के आपन मौलिक रचना हो। वहाँ बहुत नम्मा समय सम भूमीगत जीवन बिताई बेर उ समय के उकुस - मुकुस बातावरण, अन्याय अत्याचार मुक्तिक बहुत से गीत रचना वहाँ करल रलह। हाल वहाँ क नाम देह नै स्याकल म हम्र क्षमा प्रार्थी बाटी] सम्पादक

सिर पर पगरिया बाँधे लै, काँध पर कोदरिया लेहलै।
आगे आगे बैल चले भिजे रे किसनवा ।।१।।
(खेतवा जोते रे किसनवा)[3]
हरियर हरियर खेत बहिनिया, देखे मन जुगाएल बनवा।
चम चम चमके किसनवा, आँख लगावै सेठवा ।।२।।
खेतवा जोते रे किस वा ... ... ।
तोर सबके पसिनवा भैया, कब मिले आपन सुखवा।
सालभरके मेहनत भैया एक दिन ले जावै सेंठवा ।।३।।
खेतवा जोते रे किसनवा ... ... ।
कब तक सहवै हमसब, दुःख के इसब दिनवा ।।
ऐबै जब ऊ दिन बहनिया, हितै हम सब आपन रजवा ।।४।।
खेतवा जोते रे किसनवा .. .. ।
पैबै संघर्ष से हम सब, शोषण से मुक्ति पैबै ।।५।।
अन वे हम सब उ दिनवा, हेतै आपन कलेनवा ।।६।।
खेतवा जोते रे किसनवा .. ... ।

साभार
जनसाँस्कृतिक मञ्च
मधेली सुनसरी

हम सब सामन्ती ब्यवस्थाके हतावेके पतैं हो भैया हतावेके पतैं ।।

हम सब सामन्ती ब्यवस्था के हतावे के पतैं, हतावे के पतैं।
हो भैया हतावे के पतैं[2]
सब कोइ मिलके जोस बढ़ाउ सहास करो लडाई[2]
दैव दानव के चुन चुन कर, जल्दी करो सफाई, हो भैया जल्दी करो सफाई ।।
माने कम्युनिष्ट के कहनवा, हतावे के पतैं
हो भैया हतावे के पतैं ।।
हम सब सामन्ती ब्यवस्था के हतावे के पतैं ... ... ।
बघुवा बनके जङ्गल में चढे, रोजहु आदमी खाए।
गरज उठे बादलके झोकन झुठेके मदराए हो भैया झुठे के मदराए
चारु ओर के दुश्मनुवा हतावे के पतैं, हो भैया हतावे के पतैं ।।
हम सब सामन्ती ब्यवस्था के हतावे के पतैं ... ... ।
हिम्मत कैके बघुवा मारु जङ्गल हेतै सफाई ।।
उल्टा - सप्टा, सिधा - सादा सबके हेतै भलाइ
हो भैया सब के हेतै भलाई ।।
मानु कम्युनिष्ट के कहनवा हतावे के पतैं हो भैया हतावे के पतैं।
हम सब सामन्ती ब्यवस्था के हतावे के पतैं ... ...।।

रोटीक बत्कोही

'काल मैं त्वार लाग जहाँसे हुइलसे फे रोटी माङक ल्यान देहम । । ल्या, ल्या आब पानी पि, तब सुत् । निंदैलसे भुख फे निंदाइथ, छावा !'

बच्चा प्याटभर पानी पिक कुक्कुर सक नङट भुईयम धनमनाक सुतल । बच्चाके दाईक आँख सुस्त[2] आँशसे भर गैलस् तब भुखाईल आपन छावसे ऊ फे भुखल सुत गइल । दुनु भुखाईल दाई - छावाके आँगले भिजल आँख कुछ घचिक लाग सून्य अक्काशम घुम्ती रहलन् कुछ खवाजसक । तब दाई आपन छावक आँखम एक प्यारा पुलुक ह्यारल । ऊ बच्चा के आँखमसे भुखके ज्वान्जा बाहर निकरक आए खवाजत् देखपरथ ।

'दा ! निंद नै आइल, एक्थो मीठ बत्कोही सुनावो त !' बच्चा रुन्च्या स्वरम कहल तब फेर दोज्र अक्काशम हँस्ती रहल जोन्हीयाह एकटक लगाक हेर्ती रहत आपन छावह देख्क दाई पुछलस — —

'जोन्हीया मामक बत्कोही सुन्ब्या ?

'अह !'

'रज्वा - रानीके जे ?

'अह !'

'सुग्घर - अप्सरा हुकहनक् बत्कोही सुन्ब्यात ?

'अह !'

'जादूके दियक बत्कोही जे ?

'ऊ फे नै सुनम्, दा ! ?

'वसीन हो कलसे क्याकर बत्कोही सुन्ब्या त, तै ? दाई दिक्दार हुइलस ।

'रोटीक् बत्कोही सुनावोन, दा ! '

'नै हुई, छावा नै हुई !' ऊ हदबदाक एकाएक उठल तब आपन मैगर भुखाइल छावह फे जुरुक्क उठाक छातिम लगाक जोर - जोरसे रुइलागल ।

ले० अनवर शमीम

अनु : श्रीमती शान्ति चौधरी
बैंगाङ, दाङ

साहित्यकार आपन देश, आपन वर्गके आन्तरिक अनुभव, वाकर कान, आँख और हृदय – आपन युगके आवाज हो ।

माक्सिम गोर्की

प्रतीज्ञा

प्रजातन्त्र जहोंर तहोंर प्रजातन्त्र ! तर प्रजातन्त्र कहलक काहो कौन चीजके नाम हो बिचरा सोझा गाउँके जनतनके लाग का थाह। जहोंर तहोंर नारा, जुलुस, भाषण कहोंरे प्रजातान्त्रीक समाजवादके नारा, कहोंरे वैज्ञानिक समाजवादके। बिचरा ग्रमीण जनता तमासे होकर तमासा हेर्थ।

जहोंर तहोंर अशान्ति, अराजकता, असुरक्षा महङ्गी, घुसखोरी, तानाबाद, कृपावाद, लिवरी (चुकली) झन-झन चरम सिमामें पुगती बा। एक ओर मुट्ठीभरके मनै कैसि के सम्पत्तिके फैलाव व सुरक्षा करना हो कैके बहुय सक्रिय देखापर्थ कलसे दोसर ओर बहुसंख्यक जनता गास, बास, कपास, स्वास्थ्य सुरक्षा और शिक्षाके लाग आकुल ब्याकुल बाट। जनता अलमल्ल बाट, का यह हो प्रजातन्त्र ?

नेपालके तराईके एक बहुत पिछडल गाउँ जहाँ एक छोटी परिवार रह। जौन परिवारमें दुई जना सदस्य रहल दिदी और भैया। दिदी सौनी और भैया असारू। हुकनके दाई हुक बहुत छोट रहलक समयमें हुक न टुहुरा बनाकर यह समाजके घृणित क्रियाकलाप देखक डर यह असार ससारसे कबु नै फर्कना कैहीके चलगैल। हुकनके बाबा बजारू निरक्षर हुइल सेफें समाजके लुटाहा, चुसाहा सामन्तनके बिरोध करलक ओरसे समाजके सामन्तहुक झुट्ठा मुद्दामें फसाकर जेलमें दारदे

रखलह। जेलके यातना, अमानवीय क्रियाकलाप कुपोषण यो सबकै कारण वकर स्वास्थ्य बहुत बिगर गैलस। बल्ल बल्ल जेलमुक्त हुइल तर वहीहन तमास किसिमके रोगके कीरा हुक वकर शरीरमें आक्रमण करलगल।

बिचरा उह परिवार आब काकर सेकना अवस्थामें रहगैल। गुरुवन पाती बैठैना, बिराहेरैना शिवाय ! बिचरा बजारू मृत्यु शैयामें परल रह। ६ वर्षके नाबालक असारू आपन बाबक पँजर बैठकर बहुत हृदयविदारक शब्दमें कह "बाबा ! कब उठबो, जातदिन आगैल, भुखलागता, दिदी गुरुवा बलाए गैरहल। भात फे नै रिझैल हो।" आपन अवस्था समझके और आपन छावक हृदयविदारक शब्द सुनकर बिचरा बजारूके शब्दके सट्टा आँखीसे आँस खस लगलस। बोल खवाज शब्द घाँटीमें अँटक जैथस। बल्ल बल्ल बोलथ आब उठब ग्वार छावा ग्वार राजा ! आब तोर दिदी आइत भात रिझाईत खैबो।

सौनी गुरुवा मण्डुक घरमें पुगथ। मण्डु बरका (बडका) खोरीयामें जाँड पिअतह। सौनी बहुत दुःखित शब्दमें कहथ "बुबा ग्वार बाबा बिमार होकर सुतल बाट। पाती बैठदिह चोल देव।" मण्डु बहुत कठोर शब्दमें कहथ- "मै नै जैम त्वार घर पाती बैठ,त्वार बाबा मुई त मु जाई !" त्वार बाबा फटाहा बा। जिमदारके, गुरुवनके बिरोध करथ। जिमदारके गुरुबनके बिरोध करलक ओरसे पाप लागके झेल जाई परलस झेलसे छुत्ती पैतीकी बिमार होगैल। बेसिन पापीकलागके पाती बैठ जाई। तुहन पापीनके घरमें ग्वारा रखना फे डर लागथ नत त्वार घरमें जाँड, दारू होई। नै पिक मै काम नै कर सेक्टुँ। का तोर घरमें भुखमुअ जैनाहो ?

मण्डुक बात सौनिक आत्ममें तीर बराबर लगथिस मुर्छा परजाइथ। एक घरी पाछ होसम आक मण्डुक पाऊ पकरक रुईलागथ। रुईत[2] वाँकर आँसले मण्डुक पाऊ भिजजैथिस। मण्डुक पथ्थर जैसिन कठोर आत्मा सौनिक आँससे भिजक कुछलरम करादेथस। मण्डु सौनिह उठाक कहथ "चोल नतीन्या! त्वार बाबा मै मजा करादरम, जिन रो।

मण्डुक बात सुनक सौनिक आत्माम आशाके सञ्चार जगमगा जैथस। उ जुरमुराक उठक मण्डुक हात पकरक आपन घर ओर रबाना हुइथ। ओकर मनम ऐसिन लगाथिस कि मोर बाबा अब जरुर ठीक हो जैहीं। काल साँझी भुखाईल होइलसेफें मानो अही भुख, प्यास, निंद थकाई कुछ नै लागल हुईस। मण्डुह लेक सौनी आपन घर पुगथ। मण्डु व सौनी बजारुकको ठाम प्रवेश करथ। वह कोठाके दृश्य ऐसिन अद्भूत किसिमके दयनीय देखा परथ कि यह संसारम बजारुक परिबारसे दरीद्र परिवार कहों नै हुई, लेकिन बजारुक जैसिन दरिद्र, दु खी परिवार अर ौं संख्यामें बाट। मण्डुक जैसिन मनै जोकी दुनियाँके स झा नमुखा जनताके पासना रगत मोटाइल मनै यी दुनियाम बहुत कम बात।

बजारू मृत्यशैयाम परलरह। ओकर पँजर असारू चुपचाप बैठरह। वहा कोठाके दृश्य ऐसिन हृदयविदारक रह कि जैसिन फे पाषण हृदयीनके ऑखसे आँस खसक रह नै सेकथ। बजारू एक फाटल गोन्द्रीम सुतल रहथ। बिचरा असारू दुःखो नजरसे गुरूवा मण्डुहन हेरथ कि मण्डु ओकर बाबाह जरूर मजाकरा दि। पाषाण हृदयी मण्डुक आत्माह फे वह दृश्य गलार्दथिस। मण्डु सौनिह आदेश दिहथ "जा नतीन्या झट्टपाती सुँगा" मण्डुके आदेशानुसार सौनी पाती

सुँगाइथ। मण्डु पाती बैठके स्यकथ। सौनी व असारू मण्डुक एक एकथो ग्वारा पकरक पुछ लागथ का देखलो बुबा? का हम र बाबा चुम्मर हुई? मण्डु जवाफ दिहथ - का नै हुई, होजाई, जिन डराओ। बोक्सीन, भूत, मशान लागलअस लगथा। मण्डुक जवाफ सुनके सौनी बहुत उत्सुकताके साथ पुछ लागथ - "का का करपरीत बुबा? का का खोजक परी? "मण्डु कहथ - "बोक्सीने सन्ताईकलाग सातथो चिङ्गनी, एक जोर चुरी (चुडीया); कजरा (गाजल) और सिन्दुर और भूत मशानहे सन्ताईक लाग एकथो छेगरिक डागर एलथो सुरिक डागर एक जोर परेवा, एकथो परु (पाडो) अतरा चीज खोजही परी। यह पूजा बरका पूजा हुइलक ओरसे चैत पञ्चमीमे पूजपरथ।

मोहनके प्रवेश - वह कोठाके दृश्य मोहनके आँ से आँस नै आक नै छोरल। लेकिन मोहन सहनशील, आत्म समयमी युवक होईलक ओरसे आत्मसयमके साथ उ गुरुवा मण्डुह हेरक पुछथ - "विरामीके हाल का बा?" मण्डु आगे कहलक सब बात बत्वाइथ। मण्डुक बात सुनके मोहन सौनीसे कहथ - 'हेर बाबु! यी सब अन्धविश्वास हो। अन्धविश्वास शब्दके अर्थ काहो, सौनी अकमक इथ और पुछथ अन्धविश्वास कलक काहो दादु? मोहन अन्धविश्वास शब्दके अर्थ कहथ - "अन्धविश्वास कहलक विना प्रमाणके बातमें विश्वास कर्ना हो।" गुरुवा मण्डुक बातके सब अन्धविश्वास हो। वह ओरसे मोर विचारत बोक्सीन्या, भूत प्रेत, मशान मनाक विरामी ठीक नै होई। अस्पतालम लैजाक डाक्टरसे जांचक औषधि उपचार करपरल। औषधि कराईकलाक साथिनसे मै आर्थिक सहयोग सङ्कलन करम।

मोहनके बात सुनके गुरूवा मण्डु वरा जोरसे रिसाईथ और कहथ - "मोहन ! तै बरा जन्ना हुईल बात्या, फटाहा, बैमान, गधा, बदमाश, गोरू आदि अश्लील शब्द प्रयोग कैक मोहनह गरियाइथ, और धम्की देहथ- "हेर सौनी नतोन्या बेरुह्याँ कराहों बसहों होजाईत मैं नै जनम। लैजैना बात लैजाओ अस्पताल, डगडारसे कराओ औषधि। सौनी बहुत डराइथ। मण्डुक ग्वारा पकरक रूईलागथ और कहथ "नाही बुबा ! जिन रिसाओ ! मण्डु मन² हाँसथ और कहथ - वैसिन हो कलसे मोहनहन तुहनके घर जिन आईदेओ। मोहन तुहन के घरम आईत तुहनके बाबा मुजाई। और मैं नै जनम। सौनी मोहनके ओर हेरती कहथ- "दादु तै हमार घर जिन आईस। तै ऐब्यात हम र बाबा मुजैही। हमारका दशा हुई ?

सौनीक बात सुनके मोहन बहुत निराश, बहुत दुःखोत हुईथ। उ सौनीहन समाजम विद्यमान अन्धविश्वास सामाजिक कुरीति बुझाई सेक्लक ओरसे आपन कमजोरीहन धिक्कारथ और मन² गुनगुनाईथ- "हमार समाज आजतक बहुत पाछ परलवा भरखर पाषाण युगसे उठकलाग जुरमराईता कलसे फरक नै परी। अन्धविश्वासके कारण विभिन्न किसिमके सामाजिक कुरीतिसे हमार समाज ग्रसित बा। जबतक यी विद्यमान अन्धवश्वास, सामाजिक कुरीति समाजसे नै हटाई सेक्जाई तब सम्म हमार समाज प्रगति नै कर सेकी। उ चुप चाप बजारुके सिघ् स्वास्थ्य लाभके कामना करती सौनीक घरसे बहुत दुःखी होक निकरथ।

बजारुके समपत्तिके नामम एक कट्ठा घरबास और एकथो जीर्ण आवस्थाम रहलक छोटीं छप्पर सिवाय कुछ नै रथस। पूजाके सामा जुटाईकले रुपियाँके आवश्यकता परलस।

ऐसिन दुखके घडीम ओही सहयोग करईया कोई नै रह। रह एक मोहन लेकिन उ आब बजारुक घरम कसीक आइ ? एक मात्र उपाय उह एक कट्ठा घरबास बेचना सिवाय और उपाय नै रह गैल। गाउँके जमिन्दार कालराम फे बजारुक एक कट्ठा घरबास कसीके हडपनाहो कहक उपाय सोचती रह। यह घडी ओकरलाग बहुत कामयाब हुइलश। एक हजार रुपियाँम कालुराम बजारुक घरबास किनल। उह एक हजार रुपियाँ खर्च कैक गुरवा मण्डुके निर्देशानुसार सारा वस्तु तयार करल। घरम हुईलक १५-१६ मुरी अनाज जाँड, मद बनाक ओरैल। बिचारी सौनी एक ओर आपन बाबक सुसार कर्ना दोसर ओर पूजाके लाग सामा करना बर्ते हार ओ छाला केल होगैलरह। एक ओर भैयक चिन्ता, दोसर ओर आपन बाबक, तेसर ओर पूजाके सामा करना बिचरी मन मन कहथ- "हमन भगवान दुनियाँमें काकर जन देहल। पूर्व जनम्म हम्र कौनसे बहुत भारी पाप कर्ली, भगवान हमन ऐसिन कठोर सजाय देहता ! ऐसिन कठोर सजाय भोग परता !

चैत पञ्चमी फे आइल। एक दिन पहिलेसे सारा कुल, कबिला, ईष्ट मित्र जम्मा हुइल पूजाके निमन्त्रणा स्वीकार कैक। गाउँ भरीक गरधुरियन और गरधुरन्यन आपन आपन नात नत्कुर लेकर बजारुक घरम जम्मा हुईथ। पूजा बहुत धुमधामसे सम्पन्न होईथ। लोहार सूजी पर्क शिकारके लाग जम्मा होईथ। बिचारी सौनीईष्ट मित्र गाउँ गवलियन बहुत प्रेमसे खवाइथ। सुकजना सौनीक बहुत प्रसंशा करथ। यी लौ-यात बहुत होन हार, बहुत कुसल बा। ऐसिन गरीब परिवारम कसिक भगवान जनम देलस। सकुजान भगवानसे बजारुक सिघ् स्वास्थ्य लाभके प्रार्थना करती आपन² घर ओर

प्रस्थान कर्ल। सब जान इष्टमित्र गाउँ गवलिया निमन्त्रणा स्वीकार कैक बजारुक घरम ऐल लेकिन मोहनकेल हो, नत निमन्त्रणा पाइल, नत आईल। काकर कलसे गुरुवा मण्डुक निर्देशानुसार सौनी मोहनहन हमार घर जिन आईस दादु! तै ऐब्यात हमार बाबा मुजैही कलक ओरसे ऊ वहा ह्वै गैल। पहिले त मोहन निमन्त्रणा नै पैलसेके सौनीक घर जाईकते घरसे उ निकरलरह लेकिन बिचमे सौनीक उह शब्दके डरके मार उ नै गैल। तै ऐब्यात हमार बाबा मु जहीं कना बातह स्मरण हुइलक ओरसे जैना हिम्मत नै ऐलस।

सारा धन सम्पत्ती अन्न पात पूजाम खतम होगैलस। ओहर बजारुक स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन झन झन नाजुक हुईती गैलस। सौनीक ओ असारूक मृत्यशैयाम परल आपन बाबक आँजर - पाँजर बैठक रुईना सिबय और कौनो प्रयोजन नै रह गैलन। बजारू आपन दुई नेत्र बराबर छाई छाव आपन आँजर पाँजर बैठक रुईत देखक ओकर मुख लगलक आँखसे जबरजस्ती आँस बहलगलिस। उ बोल नै सेकथ बाकर आँत रुपी शब्द यह कथस कि स्वार दुई नेत्र जैसिन छाई और छावा आब मै तुहन छोरक कबु नै घुम्ना कैके जैती बाटुँ। आब मै तुहनके मुख देखना अन्नहो। छाई तोर भैया तोंर जिम्मा लगाक जैती बाटुँ। आपन भैयाक लाग बाँचस छाई।

विचारा मोहन छटपटाईथ जबरजस्ती बजारुक घर जाक अप्नहे बोंक वहही अस्पताल लैजाक औषधि उपचार कराउँ लेकिन सौनीक उह "दादु तै हमार घर जिन आईस। तै ऐब्यात हमार बाबा मुजैही शब्दसे मोहनके हिम्मत नै ऐथस। अन्धविश्वासी समाजह धिक्करती ऊ पाऊ रोकथ। और मन - मन बरबराईथ- "आब विचरा बजारुक

कैसिन हालत हुईथिस कह नै सेक्जाई। विचरा निर्नोष अबोध सौनी और असारूक कादोष ? विचरा हुकनक का दशा हुई हिन ? सर्व ब्यापी सृष्टि कर्ती भगवानफ कैसिन निष्ठुरी!

बजारूक बाक्यत दुईदिन पहलसे हेरा रलहस। आब वाँकर मुटुके ढुक - ढुक सिवाय कुछ नै हुइस। बुट बेरीक बत्ती अस एक घचिकलाग ओकर आंख उघ्थस। आब तुहन छोडक जालगनु कैके आपन छाई छावहन अङकमाल करक लाग बल्ल - बल्ल हाथ उठाई खोजथ लेकिन उठाई नै सेक्क उ हाथकेल हिलाइथ। वह बेलाम सौनी और असारू आपन बाबक छातीम घोप्त्याक रईलगथ। विधिके विधान बरा ताजुबके रहथ। एकथो उखान बा "पात्तीर वेन्होम पवाङ परथ। "विचरा एकत सामाजिक, आर्थिक शोषणके मारम परलक दु खो दरीद्र परिवार त्यहुम दैविय प्रहार फे वह परिवारमें पर्ना। ऐसिन प्रहार एक किशोरी कैसिक सामना करी ? विचारी सौनी यह सब निर्दयी मार खप नै सेकक कबुत आत्महत्या करना फे तयार होजाय लेकिन अपन भेय अस - रह समझक आत्महत्या कर नै स्याकथ। उ संकल्प करथ, समस्यासे डराक आत्महत्य करना बहुत भारी कमजोरी हो, पाप हो कैक आब मै आत्महत्या कबु नै करम समाजम विद्य - मान अन्धविश्वास, जाति भेद, लिङ्ग भेद, अन्याय अत्याचार, शोषण दमनके विरुद्ध संघर्ष करकलाग बँचाय और बँचम आपन भैयक असारूक लाग कैक। मै आप्नहे कमलहरी लागक भीख मागक हुइलसेफे आपन भैयहन समाजके कर्णधार बनाइक्ते विद्यालयम भर्ना करम। भुखल रहक हुईल सेफे कापी, किताब, कलम किन देहम। मोर भैयहन मानव बनाक रखना जिम्मा मोर दाई बाबा महीहन छोडगैल। यी जिम्मा मै जरूर पूरा करम।

सौनोह पूर्व स्मृति होईथस उह मोहनके शब्द "बाबा अन्धबिश्वासम नै परनाहो। पाती बैठक, विराहेरक धामी, झाक्री बैठाक कभु विरामी सन्च नै हुईहो। अस्पताल लैजाक औषधि करैनाहो। आर्थिक सहयोग मै करम।" उ सोचथ - बदि मै मोहनके बात मानजैतुत मोर बाबा बाचजाइत, सारा सम्पत्तीके नाश नैं हुईने रह। और गुरुवा मण्डुक शब्द फें स्मरण करथ- "अस्पताल लैजैना बात लैजाओ। जसहों तसहों होईत मै नै जनम।' सौनी महीनौ दिनके भुखाईल बघिनीया जैसिन देखपरथ। लाल - लाल आँख, लतपताईल शिरके केश दुखलगतिक बिचारी पिअर, डुब्बर शरीर। एक मनले सौनी सोच आब तुरन्तजाक गुरुवा मण्डुहन मार दारू लेकिन गाउँक आसपासके मुरगी, सुअर, जाँड मडके भँकरी सुखैलक भीम-काय शरीर लगारा अस ढ़िरह सम्झथ। तत्काल जाकर वाकर सामना कर्ना हिम्मत नै परथिस।

सौनी मोहनहन सम्झथ। मोहनह प्रयोग कैलक आपन उह शब्द सम्झथ- "दादु ! तैं हमार घर जिन आइस ! तैं ऐब्यात हमार बाबा मुजैही।" सौनीक नेत्रसे अश्रुधारा खस लगथिस। तुरन्त मोहनके घर जाक वहीसे क्षमा याचना मग्ना विचार करथ लेकिन मोहनके घर जैना हिम्मत नै परथिस।

ओहर मोहनके हालत फे ओस्तहे रथिस। उ सोचथ कि कैसिक सौनीक घर जाक सौनीक दीन दुःख परिवारहन सम्वेदना देनाहो। ठीक यह समय सौनी पानी भर घत्वा गैलरह, मोहन काम काज ओराक उह डगर आईतह। दुनु जहनके भेत हुईथन लेकिन दुनु जन्हके मुहस शब्द नै निक्र सेक्थन। दुनु हुनके आँखीम आँस छलवलाई लगथिन। बल्ल

बल्ल सौनी बोलथ- "दादु ! क्षमा करस्। तोर बात मन्तुत, मोर बाबा स्वर्गारोहण नै हुईने रह। सारा सम्पत्तीके नाश नै हुईने रह। वह पापी मण्डु गुरुवाक कारणसे मोर दाई बाबा हमन टुहुरा बनाक यी समाजके घृणित क्रियाकलाप देखक डर यह असारम यी ससारमे कबु नै घुमना कैक स्वर्गीय होगैल। सौनीक आँख फे दोस्र रसाजैथस। बहुत दुःख पोखना मन लगथिस लेकिन शब्द घाँटीसे बहार नैं निक्र सेक्थिस।

मोहन सौनिक आँस पोछ दिहथ और सम्वेदना दिहथ जिन रो बाबु ! आखिर यह असार संसारमें जन्म लेलसे नै जाकर सुख नै हो। हस्र फे एक दिन उह डगर नै जाकर छुट्टी नै हो, खाली एक दुई दिनके आग - पाछके लहो। तोर दाई बाबा त यह समाजके मानवीय अवताररुपी दानव हुकनके दानवी क्रियाकलाप अन्याय, अत्याचार शोषण दमन देखक डर गैगैल लेकिन हस्र विभिन्न प्रकारके अन्धविश्वास, सामाजिक आर्थिक शोषण दमन, अन्याय अत्याचारके विरुद्ध संघर्ष करकलाग बाँच परल वा वह ओरसे बाबु ! तैं फे फुर्सत के समयमें लेखना पढना काम करपर्था मै फुर्सतके समयमें पढ़ादिहम। तोर भैय असारुहन तुरन्त विद्यालयमें भर्ना करक पडल।

सौनी आपन भैय असारुहन विद्यालयमें भर्ना करक लाग कालुरामसे रू. १५०/- ओकर घरमें कमलही लगना कबुल करके ऋण लेहल और आपन भैय असारुहन विद्या-लयमें भर्ना करथ। आसारु साँझ विहान कालुरामके घरमें कमैयाके रुपमें घाँस कटना, विद्यालयके विदाके दिनमें छेगरी भेंडी चराकर पेट पलना बाध्य होईपडलिस। सौनी आपन भैय विद्यालयमें भर्ना करपैलक ओरसे बहुत हर्षित देखपरथ।

मानो ओकर दीन दुःखी परिवारके भविष्य अजरार होईलागल।

मोहन गाउँके कुछ युवक युवती हुँकन और सौनीहे फुर्सतके वेला साँझमें पढैना शुरु करल। सौनी बहुत तेज बुद्धिके कारण केही समयम साधोरण लेख पढ़कर सेक्नाके साथ साथ सामाजिक चेतनाके ज्ञान फें प्राप्त करल। एक ओर सौनीक ज्ञानके प्रतिभामें कोपिला लगना शुरू कैलिस दोसर और वकर पात्तीर मिलल गोरहर शरीर भारी भारी करीया - करीया आँख, लम्मा - लम्मा कुब्बर करीया - करीया केश देखके कालुरामके दानवी आत्माम ब्यभिचारके टेल्वा पहलाइ लगलस। ओकर आँख चोर विलराके जैं न हरहमेंशा सौनीक रुप देख लगलथ। उ सौनीह बहुत प्यारसे ब्यवहार करलागल।

अचानक पाषाण हृदयी कालुराममम अतरा हाली परिवर्तन होईत देखकर सौनी बडा अचम्मम परल। उ स्वाच लागल कि कालुराम जैसिन पथ्थर दिलके मनैनम काकारणसे अतरा हाली परिवर्तन हुईलस याकर रहश्य जरुर बा! उह ओरसे मै जरुर ओहीसे सतर्क होईपर्ना बा। कालुराम जसिन नरपीचाशन, पाषाण हृदयीनके आत्मा कबु कुईनही आज तक पगलाई सेकलहो, नत कबु कोइ सेकी घर अकर आत्मा कैसिके पघल सेक्थस। जरुर यी भूत मानवी खोल लागाकर मानवीपन देखैलक केल हो।

कालुराम सिक्टी जैसिन शब्द सौनीह प्रयोग कर आब ओकर ठीक विपरित निर्मल कञ्चन पानी अस शब्द प्रयोग करलागल। कालुराम पहिलत सौनीक छुअलफे नै खाय लेकिन आब सौनीक दिहल बहुत मीठ मानक खाईलागल। यहाँ तक कि कबु - कबु त ऐसन फे कह- "बाबू! मोर खाना

तै पकाईस। तोर दिहल त बहुत मीठ लागथ। पकैलक ज्ञन कैसिन हुई। ऐसिन फे कह- "बाबू! कबु कबु तै नै ऐत्यात मही खाना फे नै खैनास लागथ। आब बाबु तै यह सुतस। सस्ता कोठा पलबा। ओढ़ना विछौना फे पलबा।"

कालुरामके ऐसिन तेलार बात सौनीके आत्माम तीर बराबर लगथिस। कबु यी दानवके पञ्जसे मुक्ति मिली। एक मिनेट फे ओकर घरम वितैना वर्ष दिन बराबर लाग थिस। सौनी कहथ- "दादु! तोहार खाना बन्यूया सिपार मनै सस्ता पलबाट। मोर घरम मोर भैया ईक्कहेल डराइथ, मै घर नै जैमत मोर भैया डराई उ कसिक रही? उह ओरसे दादु मही ईहा बहुत रातसम जिन रोकहो! नै त तुहीन पापलागी।

सौनीक बात सुनक कालुरामहन बहुत रिस लगथम लेकिन आपन रिस जवरजस्ती रोकना कोशिश करथ। और सौनीम जौन चेतना देखापरथ वह चेतना कालुरामहन बहुत सचेत बनादेथस। उ सोचथ यी गाउँम गरीवनमें चेतना लनो ईया अरुर कुइ नै हो वह मोहन हो। उ बहुट बेमान हो। एक पटक जेल गैलक विसरा दारल कि का हो? कम्युनिष्टके काम अस्तह रथिन। गरीवनम चेतना लानक हमार विरोधम संघर्ष करैना। यी कम्युष्टिनके जर रहत सम ओहीमसे ग्वाजा लौटती रहथ। उह ओरसे हुकहनक जर उखारक फाक परथ।

कालुराम आपन मुख्य सल्लाहाकार बुद्धि नारायणह बलाईथ। बुद्धि नारयण तुरन्त कालुरामक घरम आईथ और कहथ "काकर बलैली हजुर? उत्तरम कालुराम कहथ हेरी! बुद्धि नारायण जी। आजक ल हमार देशम कम्युनिष्ट बहुत सक्षम रुपम बढ़ती बाट, कम्युनिष्ट शक्ति कैसिक

रोकनाहो कम्युनिष्ट नै हुइलक त कौनो गाउँ नै हो। एक घचो विचार करक बुद्धि नारायण बोलथ हेरी कम्युनिष्ट शक्तिह मस्ना दुथो डगर वा एक डगर नकली कम्युनिष्ट बनक हुकनक शक्ति पत्ता लगाक हुकन खतम् कर्ना और दोसर डगर मातृ संस्था नेपाली कांग्रेसम प्रवेश कैके कम्युनिष्ट शक्तिह रोक्ना।

बुद्धिनारायणक बात सुनक कालुराम बहुत खुसी हुइथ। बुद्धिजारायणक पिठम हात धैक स्यावासी देहथ- बुद्धिनारायण धन्य हो तुँ! जैसिन नाम वैसिन काम! कही आब मै काकरू? बुद्धिनारायण बोलथ अपन २००७ सालक जनक्रान्तिम सक्रियता पूर्वक भाग लेलक मनै हुई। २०१७ सालम प्रजातन्त्रके अपहरण हुईल। अपहरित प्रजातन्त्रके खोज गुहारम निर्वासित जीवन फे बिताइक परल। २०३८ सालम जनमत संग्रहके घोषणा हुईल। सुधार सहितके पञ्चायती व्यवस्थाम फे अपनेक योगदान बहुत बा। २०४६ सालक जनआन्दोलन दवैनाम फे अपनेक योगदान बहुत बा। समय और परिस्थिति अनुसार चलक परथ। पञ्चायती व्यवस्था बँचाईकलन जनआन्दोलन दवैना प्रतिकार समितिमें रहलक मनैत नेपाली कांग्रेसम प्रवेश कैसेक्ल। उह कांग्रेस पञ्च उह पञ्च कांग्रेस। उह ओरसे अपन फे नेपाली कांग्रेसम प्रवेश करी। नेपाली कांग्रेसम प्रवेश कर्ना कौनो कठीन बात नै हो। भीतर जैसिन हुईलसेफे बाहार कांग्रेसी आवरण, कांग्रसी टीका लगैलसे होगैल। कुछ कार्यकर्तन साम्यवादके खोल ओढ़क कम्युनिष्टनम पठादी। यह सबसे उचित डगर हो। ऐसिन उपाय नै कैक नेपालम बाँच नै सेक्जाई। नारा प्रजातान्त्रिक समाजवादके पलबा। और व्यवहार त हमार आपन पलबा। व्यवहारम फें प्रजातान्त्रिक समाजवाद प्रयोग

नै कर्वीत हम्र कबु नै सेक्बी। कमैया, कमलहर रैती कैसिक पैबी?

बुद्धिनारायणके सलाह अनुसार कालुराम आपन ६-वर्षके पुरान समर्थक हुकनके नामावली तयार पारथ और दलबल सहित नेपाली कांग्रेसम प्रवेश करथ। केन्द्रम नेपाली कांग्रेस पार्टीके आयोजनाम स्वागत समारोह बहुत धुमधामके साथ सम्पन्न हुईथ। नेपाल रेडियोसे समाचार प्रचार हुईथ- "कालुराम यतिजना आपना सहयोगी लिएर पूरा दलबल साथ मातृसंस्था नेपाली कांग्रेसम प्रवेश गर्नु भयो। वहलाई भव्य स्वागत गरियो।

कैसिन अनौठो नेपालके राजनीतिक सिद्धान्त और व्यवहार जैसिन रहलसेफे टीका लगैलसे काम खतम! प्रजातन्त्रके टीका लगैलसे प्रजातान्त्रिक, समाजवादके लगैलसे समाजवादी। पहिले प्रजातन्त्र प्राप्तिके लाग चलैनक जन-आन्दोलन दवाईकलाग आन्दोलनक री हुकन जनता पुठलसेफे प्रजातान्त्रिक। समाजवादके टीका लगैलसे प्रजातान्त्रिक समाजवादी!

कालुराम मातृसंस्था नेपाली कांग्रेसम प्रवेश पैती साईत चुनावके भूमिका तयार पारकते गाउँम प्रवेश कर्ना विचार करक बुद्धनारायणसे कहथ 'बुद्धिनारायण जी! चुनाव बहुत नजिक आगैल बा उह ओरसे आब प्रचार प्रसारके कार्यक्रम त बनाईक परल। बुद्धिनारायण सुझाव देहथ। हेरी! हजुर जौन गाउँमें जैसिन कैके प्रभाव परथ वेहिह समर्थन करक परथ। हम्र सबसे पहल थारू समुदायम देश बधियन, गुरुवन और महतावन पकरक परय। कहनक माध्यमसे हम्र चुनाव जरुर जित सेक्बी। परवाती और दोसर और जात होईलक गाउँमें

बडामहाराजाधिराज पृथ्वीनारायण शाहके महानवाणी चार जात छत्तीस वर्णके नारा पलबा। थारू समुदायम जे सहयोग नै करीत सामाजिक बहिष्कारके नारा देहक परी।

असारू फाटल - फाटल कट्टु और फाटल[2] झुत्वा लगाक विद्यालयम पढे जाईथ। धनिनके लडका ओहीहन बहुत हेलहा कर्थ। कबु[2] त हित्वा फे कथस। हित्वा शब्दके प्रहार असारूक आत्मार बाण समान चोट लगथस। आखिर ओकर आत्माके चोट देखोइया संसारके प्राणीनके अखोरिया और ओकर दिदी सौनी सिवाय कुई नैही हो। विचरा असारू रूईत[2] लाल लाल आँख लेक घर आए। ऐतिकी झोला धरक मुखल किसनवा कालुरामके घरम गैजा लेक घाँस काट जाइथ। आपन भैयक भुखाईल, पियासल शरीर देखक सौनीक नेत्रसे अश्रुधारा बहलगथिस। कोही नै देखैना कोशिस करती करती फे ओकर किस्नीन्या कालुरामक जन्नी जगमोहनी देख डरथिस। जगमोहनी बोलथ- "काकर रुईते रे ? का धन्धा छोडक ! का सम्झक रुईथ बेश्या, रण्डी, आपन भटार समझक रुईत्या।

किस्नीन्या जगमोहनीक अस्लील घृणित गारी सुनक सौनीह असह्य होजैथिस। एक मनसे त कहथ जगमोहनीह मुहभर जवाफ दिउँ लेकिन विचारी असहाय होईलक ओर से आतम संयमके साथ चुपचाप मनके वातह मनमें पचाक रहल। ओकर आँखसे तुरन्त आँस सुखगं स। आत्मा जर लगथस उ मन - मन कहथ "हे भगवान यी नरपिचासके घरसे कव हमन छुटकारा मिली ? कौन जुनीके पाप होई ?

बल्ल - बल्ल दिनभरके काम काज ओराक सौनी और असारू आपन घरम बसेरा लिहकलाग ऐथ। विछौनाके

नामम एकथो गोन्द्री, ओढ़नाके नामम एकथो फाटल गोन्द्री सिवाय और कुछ नै रलहिन। सौनी आपन भैय असारुहन कहथ- "भैया हम्र जैसिन दुःख यी संसारम कोई फे नै पैल हुई। भगवानक प्रहार फे हमार उपर! कतरा निर्दयी बा। हमार दाई बाह हमनसे अछिनक लैगैल। यह समाजम निर्दयी दानव हुक्र जहोंर तहोंर मनैनके रगत, पसीना चुसकतन बहुत सक्रिय बात। भैया तै एको नै दुःखनानक बहुत ध्यानसे पढ़स। तोही मै यह समाजके नरपिचासनके अन्याय, अत्याचार, शोषण, दमन खतम करकलाग देशके समाजके एक कर्णधार बनाईकतन कमलहर लाग्क, भीख मागक हुईलसेके तोहीहन पढैम।

आपन दिदीक बात सुनक असारूक आँख रसाजैथिस। आपन दिदीक गोरम घोप्त्याक रुईलगथ। सौनी आपन भैया उठाक आंस पोछदिहथ और सम्झाईथ- "जिन रो भैया ! मै सिवाय तोर के बा ! हमार दुःखक यह समाजके दानवी आत्मा रहल मनै हस्थ, गैथ नच्थ यह ओरसे जतरा दुःख, पैलसेफे हम्र हँस्ती सह परथ। दुःख, सुख जैसिन परिस्थितिम फे धैर्यधारण कर सेक परथ। यह संसार दुःखसे भरल घैला हो।

आपन दिदीक अति सुनक असारू बहुत गम्भीर हुईथ। खुब ध्यान देक पढ़थ। परीक्षाम पहिला हुईथ। वाकर प्रतिभा देखक कक्षाके लडका बहुत इर्ष्या कर लगथ। वाकर शिष्ट भाषा, लगनशीलता देखक शिक्षक वर्ग उहीसे बहुत प्रभावित हुईथ। असारूह छात्रवृत्तिके प्राप्त हुईलस।

असारू गाउँके विद्यालयमें प्रथम हुईनक खबर सुनक कालुराम रिसके मार मुरमुराई लागथ, लेकिन सौनीक रूप

योवनसे मोहित हुईलक ओरसे देखावटी रूपम असारूहन बधाहिके साथ[2] कुछ आर्थिक सहयोग करना विचार करथ। उ सन्झिएक बेलाम सौनीक घर ओर प्रस्थान करथ। कभु घरम नै ऐना मनै एका एक घरम ऐलक ओरसे सौनी और असारू अचम्म मानक उठजैठ। सौनी कहथ- "काकर यहा सम दुःख पैलो दादु! आज हमार दुःखीनके झोंपरी पवित्र कैदेलो। कालुराम हँस्ती - हँस्ती कहथ- "आज मै बहुत हर्षित बाटुँ बाबू! काकर कलसे आज तोर त्याग, तपस्या आशीर्वाद और असारूके मेहनत, लगनशीलतासे उ जाँचम पहिला हुइल वह ओरसे तोही और तोर भैय असारूह बधाई दिउँ और कुछ आर्थिक सहयोग करूँ कैके ऐनु। सौनी कालुरामहन एकथो बेरी बैठना देहथ। बेरीम बैठलक मनै कालुराम बडा मुस्कीलसे हँसती बेरीम बैथत। जेबमसे दुईसय रूपियाँ निका रक सौनीह देह खोजथ और कहथ- "त्या बाबू! यी रुपिया त्वार भैयकलाग किताब कापी किन देहस्।

पाषाण हृदयी कालुरामक यह देखावटी बधाई और सहयोग प्रति सौनीह बहुत घृणा लग्थिस और कहथ- "दादु! यी रुपियाँ धैलेओ। अपनक यी रुपियाँके जरूरत नैहो। सौनी के अस्वीकार्य शब्द कालुरामके हृदयमें तीर बराबर लग्थिस। आपन घृणित आशा चक्नाचुर हुईलगलक ओरसे उ बहुत निरास हुईथ। मन[2] कहथ- "सौनी नायीका बने लागलबा। यी सब मोहनके काम हो। मै सब तुहीन ठीक करम। उ सा सर एक शब्द नै बोलक आपन घर ओर प्रस्थान करथ। कालुराम मन[2] सोचथ अगर दोसर मनै हुइतत जुत्तामारक निकार देटुँ। काकरूँ, सौनीक रुप योवन मोहीह महित बना देहलबा। मै कबु नै सोचल रहुँ कि फुहर टल्वाम कमल फूलथ

और काँटाके बीचम गुलाफ फुलथ कैक। यह झोपरीम सौनी जैसिन सुन्दरीके जनम कसिक हुईलिस। मै सौनीह कौन उपायसे अपनाय सेकम्?

कालुराम सौनीह पथरी विछैना बहाना कैक आपन कोठाम बलाईथ। उ कहथ- "बाबू! तोही विना मै बाँच नै सेकम। तोहीसे जौन दिन भेट नै हुईथ तब महो ऐसिन लागथ कि मोर मुटु मोर शरीरसे निकर गैलबा वह ओरसे तोही मै आपन सबसे मैगर जहान बनाक धरम। यहातक कि तोहीहन आपन लुगा समेत धुई नै परी। तमाम कमलहर पन्नबात।

बुबा कनाअस कालुरामक वसिन शब्द सुनक सौनीह असैह्य हुईथिस। उ एक थप्पड कालुरामक कनपटीम लगा-ईथ और कहथ- 'तोहिन तनिकफे सरम नै लागथ! नतीन्या कहना जसिन लडकीह जहान बनैम कहना। मै गरीव, दु खी असहाय जरूर बाटुँ मै एक मानवके लडकी हुँ, मोर फे ईज्जत बा। तोहार जसिस दानवनसे मोर ज्यान गैलसेफे श्वाज नै करम। और तुहार ज सन नरपीचासकसे नै झुकम। दादु आजसे वहीं विदा दैदेम। मै तुहनके जैसिन दानवके घरम नै रह सेकम्।

सौनीक हातसे थप्पड और तीस्लार तीर जैसिन शब्द के प्रहारसे कालुरामके आत्माह बहुत भारी चोट लग्थिस। उ सौनीह तुरन्त काटकर ओकर शिकार खादारूँ जैसिन रिस लग्थिस लेकिन काकर कालुराम जैसिन स्तीलम्वात मनै सौनीके रुप और योवनसे मोहित होक यी सब कर नै सेकत सौनीह फसैना दोसर उपाय सोचथ। उ एक नकली तमसुक सन्दुकसे निकारथ और देखाईथ- "देख बाबू! तोर दाई

विमार परतले तोर बाबा महीसे औषधि और पूजा करक तन १,०००/- एक हजार रूपियाँ ऋण लेलह। तै मोर घरसे चल जैवेत यह रुपैयाँ के तिरी, ओह ओरसे तै मोर घरसे जिनजा। यह रुपिया फे माफ कैदेहम और सहयोग कैदे हम।

कालुरामके बात सुनक सौनोह एकदम असैह्य हुईथि पुनः एक तमाचा जमाईथ और लाल लाल आँखीसे कालुराम हेरथ और कहथ अब मै तोर घरम एक मिनट फे नै रहम नरपिचास! मोर उपर हात लगैब्यात तोहिह यमलोक पुगादि हम। सौनीक हातके टमाचा खाक कालुराम घरके दिवाल म थक्कर खाए पुगथ। झतपत उठक सौनीह बलात्कार करक लाग बहुत करासे सौनीक करहिउ पकरथ। यह वेला सौनीक काम कैलक मजबुत हाथ शरीर अटना जोरसे कालुराम प्रहार करथ कि जौन प्रहार खाक कालुरामके बुढ़ाईल शरीर घायल होक मुर्छा परजैथिस। एक घची पाछ उ सचेत हुईथ। जहोंर तहोंर सारा कोठा हेरथ सुनसान पाइथ सौनी पहिलहे ओकर घरसे भाग गैलरह।

कालुराम आब सौनीह आटङ्कारीक आरोपमें फसैना जाल रचल। उ तुरुन्त डि. एस. पी. कार्यालयम जाईथ। डी. एस. पी. ओमप्रकाश वास्तोला ओकर स्वागत करतो कहथ- "जय नेपाल हजुर! पाल्नुहोस, के कति कारणले कष्ट पाउनु भो, यहाँको के सेवा गर्न सक्छु? कालुर म कहथ- "हेर्नोस डि. एस. पी. साहेव; हाम्रो देशमा कम्युनिष्टहरु बहुत बढ़न थाले। गत राती हाम्रो गाउँमा एक कम्युनिष्ट लडकीले आपनो घरमा आटङ्कारी कम्युनिष्टहरूको मिटिङ गराई र राती १ बजेको समयमा मेरो घरमा डकैटी गराई चालीस

हजार रुपियाँ लगे, मलाई त यति पिते कि जुन चोटले अहिले पनि शरीर दुखी रहेछ; इ हेर्नोस् न सारा गाला सुनी सक्केको सुआल गाल देखाईथ। डि. एल. पी. कहथ- "डाकाहरू क कस लाई चिन्नुहुन्छ? कालुराम कहथ- "अरूलाई त चिन्दोन डि. एस. पी. साहेव सौनीलाई भरी चिन्दछु। उ हाम्रो गाउँको हों। उसलाई ल्याए त सबै भनिहाल्छे नी।

डि एस. पी. टेबुलम रहल घण्टी बजाईथ। एक प्रहरी हवल्दार उपस्थित रुइथ। डि. एस. पी. आदेश दिहर्थ- "ए बलराम! जा वहांसंग र सौनी भन्ने केटीलाई लिएर आ। हवल्दार बलराम- हस साब! उ कालुरामके पाछ लागक सोनीह पक्र जाईथ। सौनी आपन भैयहन खाना खवाक विद्यालय पठैना तयारीम रह। हवल्दार सौनीह देखतो साईत बाकर रुप योवनसे मोहित होजाईथ। उ सौनीह बहुत प्रेमसे कहथ- "सौनी तपाईको नाम हो बैनी? सौनी कहथ हो। का काम बा? हवल्दार थारू भाषा नै बुझथ अकमकाईथ। तब सौनी नेपाली भाषाम कहथ- "के काम छ? हवल्दार कहथ बैनी तपाईलाई एकछिन डि. एस. पी. सावले बोलाए को छ, जाऔ। सौनीह आब डर कहना चीज हेरासेकल रहिस उ कहथ हिड्नोस जाऔ।

सौनीह लेक हवल्दार डि. एस. पी. कार्यालय पुगथ और कहथ जय नेपाल साव! सौनीलाई ल्याएको छ। डि. एस, पी. सौनीह आपन कार्यालयमें उपस्थित करैना आदेश देहथ। अदेशानुसार सौनी उपस्थित हुईथ। डि. एस. पी. सौनीक निर्दोषी शरीरहन शिरसे पाऊसम बहुत गौरसे हेरथ। उ सौनीक रुप यौवन और निर्दोष अनुहार देखक मोहित होक कहथ- "तिम्रो नाम सौनी हो नानी? सौनी कहथ हों। डि.

एस. पी. पुचथ- "कालुरामको घरमा गत राती डकैती परेको हो ? तिमीलाई थाहा छ ? सौनी कहथ छैन । डि. एस. पी. कहथ- "नढ़ाल नानी ! सही सही बोल । गत राती के के भयो ? सौनी कहथ- "सुन्नुस डि. एस. पी. साहेब ! मै कालु रामके घरम कमलहर बस्याको थिए । उसले मलाई बिस्तारा लगाउन आफ्नो कोठामा बलायो । उसले मलाई आफ्नो जहान बनाउछु भन्यो । मैले मानिन वह ओरसे मलाई जबरजस्ती बलात्कार करना चाह्यो उह कारण मैले उसलाई पिटेकी हुँ । और केही पनि होइन डि. एस. पी. साहेब ।

सौनी निर्दोष बा कैक डि. एस. पी. थाईपाइल लेकिन कालुराम जैसिन समाजके साड मनैनके कहलक नै सल्लसे नोकरी जैना डर और क्वीन्टलके क्वीन्टल तिलकिक चाउर टीनका टीन घ्यू, तेल समेत बन्द हुइना हुइलस । एक ओर कालुरामके महत दोसर ओर सौनीक रुप यौवनसे युक्त निर्दोष अनुहार डि. एस. पी. बहुत अप्ठयारोम परथ । आखिर सौनीक रुप यौवनसे ओकर पलरा भारी हुईथिस । डि. एस. पी. कहथ "वहिनी तिमी निर्दोष छ्यौ, जान सक्छौ तर समय समयमा म सित भेट गर्दै गर्नु । कुनै पनि त्यस्ता व्यक्ति संग सम्पर्क नराखनु जो कि जनताको घर - वरना गएर जनतालाई भडकाउने गर्छन ।

सौनी बहुत गम्भीरताके साथ डि. एस. पी. साहेबहन बिदाईके अभिवादन कैक घर घुमथ । उ डगरीम बहुतसे बात सोचती आईथ । मन[2] बरबराईथ- "दुनिया बहुत मतलबी बा । यह समाजके मानवरुपी दानव हुकनके रजाई बातिन । सरकार फे हुकहनक पेवा जैसिन बात । हुकहनक सुरक्षाके लाग बातँ अस्तह बहुतसे बात सोचती - सोचती उ घर पुगथ ।

बिचरा असारू भुख, प्यासले याकुल ब्याकुल घरक एकथो कोन्वम बैठक चुपचा आपन दिदीक बत्या हारथ आपन दिदीहन आपन आग वेखथ तब उ जरूक्क उठक आपन दिदीक हात पकरक रुइलागथ । सौनी आपन भैयक शिर सुहरैती कहथ "जिन रो, मोर भैया हमार लाग यी दुनियाम कुई नही हो, तोर लाग मै और म्वार लाग तै सिवाय मै तोर लाग बाँचलबाटुँ । मै तोही समाजके कर्णधार बनाक छोडम । समाजके नरपिचास हुकन खतम कैक स्वच्छ मानव समाजके निर्माण कर पर्था । सौनी आपन भैयक आँस पोछ दिहथ ।

लोक सभाके निर्वाचनके चहल पहल जहोंर तहोंर बा । विभिन्न पार्टीके नेता, कार्यकर्ता हुक्र बहुत सक्रिय देखापर्थ । कालुरामके लोकसभाके उम्मेदवारके रुपम बहुत सक्रिय बा । ओकर एक मात्र उद्देश्य निर्वाचन जीतक ससदम जाक मन्त्रि परिषदम पुगना रथस । उह ओरसे प्रचार प्रसारके पूर्ण तयारीम बा । कहाँ कौन किसिमक उपाय अपनैना हो यस तयारीम बा । थारू समुदाय हुईलक ठाउम एक टोली जौन टोलीके प्रचारके माध्यम जतियताके नारा रथस । परबाती और दोसर जाति हुइलक ठाउँम जातिय वर्ग सम्मन्वयके नारा देक प्रचार कर्ना निर्देशन देहथ । और तेसर भूमिगत टोलीके गठन करथ । जौन टोलीके कार्य जासूसी कर्नाके साथ साथ विरोधिन खतम कर्ना रथस ।

कालुराम थारू समुदायम देशबँधियन, गुरुवन और महतावन बलाक बहुत मजासे खानपिन कराक कहथ- "हेरो ! मै फे चुनावम उम्मेदवारके रुपम खडा रहनु अपनहुक्र सहयोग कर परल । अपन हुकहनक सहयोग और सद्भावनासे मै जरुर विजयी हुईम । मै मन्त्री बनमत अपन हुकहनक बहुत

सेवा करम। अपन हुक्क ऐसिन प्रचार करी कि यदि कालु-रमह नै जितैवी त हम्र सब खतम हो जैबी। गाउँम कुछ हुइत हम्र नै जनबी। कालुरामह नै जितैबी त हमार पानी छोरदेही। उपस्थित रहलक देश बँधियन, गुरुवन और महता वन एक साथम कथ- "ठीक बा हजुर! हम्र तयार बाटी। हम्र जरुर जितैबी।

कालुरामक निर्देशानुसार ठाउँ ठाउँम बहुत जोरतोरके साथ प्रचार प्रसार हुइलागथ। देशबँधियन, गुरुवन और महता वन आपन-आपन क्षेत्रम जाक बहुत जोर तोरके साथ डर, त्रास, धम्की, लोभ, लालचके साथ प्रचार कर्थ लेकिन ओकर कुछ प्रभाव जनताम नै परतन् जौन प्रभाव २०१५ सालम परल रह। जनताम थोर बहुत परिवर्तन सामाजिक चेतना ऐलक ओरसे हुकहनक प्रचारके ठीक उल्टा असर जनताम परल।

मोहन एक प्रज्ञक युवकके हैसियतसे उ भाषाक माध्यमसे सामाजिक चेतना फैलैना बहुत प्रचार करथ। उ मध्यम वर्गके एक सुखी परिवारम जन्म लेक फे गरीवनके सेवाम बहुतसे समय बिताइथ। ओकर प्रयाससे सौनी जैसिन होनहार सामाजिक कार्यकर्ताके उदय हुईल। उह ओरसे मोहन कालुरामक आँखके किरकीट हुइलबा।

मौहनके साथम आब सौनी फे सामाजिक काममे लाग गैल। मोहनके कर्ना काम सौनी फे कर लागल। मोहनके भार तनिक हलुक हुईलस। सौनो फुर्सतके समयम गाउँक महिला हुकन शिक्षा देना और सामाजिक चेतना जगैना काममे बहुत सक्रियताके साथ लागथ। आसपासके गरीव महिला हुकनम बहुत चेतना ऐथिन। आब हुक्क आपन हक

अधिकारके लाग जैसिन मूल्य फे चुकैना तयार हुईथ।

एक दोंर सौनी महिला सभाक आयोजना करथ। बहुतसे महिलाहुक्क सभाम उपस्थित हुइथ। सभाम वक्तव्य, गीह, कविता बाचनके कार्यक्रम रह। उदघोषक स्वयम सौनी रहथ। सौनी उठक बोलथ- "समाजके कर्णधारके जन्मदाता प्यारा बुढीहुक्क दाईहुक्क और दिदी बहिन्याहुक्क! आज बहुतसे बीर शहीद हुकनके बलिदानसे हमार देशम प्रजातन्त्रके मिर मिरे विहान ऐलक ओंरसे हम्र खुला रुपम आमसभा कर पैली। सबसे पहिल मैं दिदी बजारिह आपन विचार व्यक्त करकलाग अनुरोध करतुँ।

बजारी- "प्यारा दिदी बहिन्या हुक्क तमाम बीर शहीद हुकनके जीवनके बलीदान हमार देशम प्रजातन्त्र आइल लेकिन जौन किसिमके प्रजातन्त्र प्राप्तिके लाग बीर शहीद हुक्क आपन अमूल्य जीवनह बलीदान करल बेसिन प्रजान्त नै आइल हो। देशम हमार महिला हुकनके समस्या बैसिह बा जैसिन पहिल रह। देशम महङ्गी कालाबजारी, अन्याय अत्याचार गरीबि झन झन चरम सिमाम पुगती बा। जबतक नारी पुरुष बीचके असमानता, जनताके गास, बास, कपास, शिक्षा, स्वास्थ्य और सुरक्षाके ग्यारिण्टी नै हुई तब सम्म हम्र संघर्षम उत्र पना बा। करतल ध्वनिके साथ ताली बजथ। बजारी आग बोलथ समय छोती हुईलक ओरसे मैं आपन छोती बक्तव्यह यह रोकटुँ। लाल सलाम्। बहुत जोडसे ताली बजथ।

यीह क्रमसे बहुतसे महिला हुक्क आपन आपन विचार व्यक्त कर्थ। अन्तम सौनी एक गीत सुनाईथ। गीत ऐसिन रह -

उठो मोर बुढीहुक्क उठो मोर दाईन
उठो मोर दिदीहुक्क उठो मोर बाबन।

दुनियाक नारीन हेरो तुह्म कहाँ पुगल हुक्र;
उठ्ल जुरमुराक लिखल पढ़ल पुगल चन्द्रलोक ।
हम्र अमही कहाँ बाटी विचार कै क हेरो,
चुलहा फुकना कमलहर पठैना सामन्तीन घरम ।
पुरुषहुक्र हमार उपर कर्थ शोषण दमम,
सोच्थ हुक्र हम्रहिन आपन निजी धन ।
बनैथहुक्र हम्रहिन सनतानके खानी,
कहाँतक सहना हम्र ऐसिन अत्याचार ।
उठी जागी आब त हम्र लेक हथियार ।
उठो मोर बुदीहुक्र उठो मोर दाईन,
उठो मोर दिदीहुक्र उठो मोर बाबून ।
लाल सलाम ।

करतल ध्वनिके साथ ताली पजथ । अन्तम सभाके सभापति द्वारा सभा विसर्जन हुईथ । सब नारी हुक्र आपन अधिकार प्राप्तिके लाग संघर्ष कर्ना सँकल्प लेक सौनीक प्रशंसा कर्ती आपन[2] घर ओर प्रस्थान कर्थ ।

सौनीक प्रतिभा दिन प्रति दिन बढ़ती गैलक ओरसे कालुराम बहुत चिन्तित हुईथ । उ सोचथ आब सौनीह कसिक खतम कर्ना हो, यदि सौनीह खतम नै कर्ना हो त चुनाव जितना असम्भव बा । कालुराम आपन गुण्डन बहुत सक्रिय बनाइथ । वाँकर गुण्डाहुक्र पेस्तोल लाठी लेक जहोर तहोर टहर लग्थिस । गाउँ घर डरके बातावरणसे व्याप्त हो जाईथ । सोझा गाउँले हुक्र बहुत अपठारो स्थितिम पर्थ । एक ओर आपन हक अधिकारके सवाल दोसर ओर कालुरामके दवाव ।

एक दिन कालुराम आम सभाके आयोजना करथ बहुतसे जनता सभाम उपस्थित हुइथ । कालुराम जन संभाह सम्बोधन

कर्ति कहथ- "सज्जन तथा भद्र महिला ! आज हमार देशम प्रजातन्त्रके प्रादुर्भाव हुईलबा । देशम पूर्ण स्वतन्त्रता आगैल बा । आब निकट भविष्यम लोकसभाके लाग निर्वाचन हुईती बा । मै फे उम्मेदवारके रुपम खडा बाटुँ । सारा जीवन जनतनके सेवाम बिता सेक्नु । यीह निर्वाचनम फे जितैबो कहना विश्वास बा । हमार पार्टी प्रजातान्त्रिक समाजव दके नारा लेक आइलबा । याकर उद्देश्य हो निजी स्वामित्व कायम कैख गरीबनके सुधार कर्ना । हमार उद्देश्य यी नै हो कि बडा रुखुवा काटक छोटीके बराबरम लग्ना । हमार उद्देश्य त छोटो बिरुवाह मल जल देक बराके बराबरम लग्ना । जनता अलमलम पर्थ । खैला बैला हुईलागथ । कालुराम मायकसे चिच्याईथ प्यारा सज्जन तथा भद्र महिला ! शान्त होक बैठ दी । सब झन झन उत्तेजित होक खैला बैला मच जाईथ ।

यीह बिचम सौनी सभासे उठक बोलथ- स्वार एकथो अनुरोध बा दादु ! मै आपन बिचार व्यक्तकर पैम कि ? सभा शान्त कर नै सेकलक ओरसे कालुराम सौनीह बोल्ना अनुमति देहथ ।

सौनी बोलथ- "प्यारा जनसमुदाय ! यह सभाम मही-हन आपन बिचार व्यक्त करना मौका देलक ओरसे कालुराम दादु प्रति सर्वप्रथम आभार व्यक्त कर चाहटुँ । तमाम वीर शहीद हुकनके बलिदानसे आज हमार देशम प्रजातन्त्रके विहनीया उठलबा । एक ओर हम्र देख्थी ठाउँ - ठाउँम जुलुस, सभा, भाषण, दोसर और अन्याय, अत्याचार शोषण, दमन, अराजकता का यीह हो प्रजातन्त्र ? यीह प्रजातन्त्रके प्राप्तिके लाग तमाम वीर शहीद हुक्र आपन अमूल्य जीवन बलिदान कर्ल ? यीह प्रजातन्त्रके लाग तमाम वीर हुक्र जेल नेलके यातना

भोंगल? ऐसिन प्रजातन्त्रहन प्रजातन्त्र नै कैक अराजगता स्वैच्छा चारीताके संज्ञा देजाइथ।

हमन वैसिन प्रजातन्त्रके आवश्यकता बा कि तमाम घरबार बिहिन जनता आपन शिर घुसरना झोपरी बनैना भूमि, रोजगार नै पाक पेटके आगीसे छटपटाईल, लुगा नै पाक पुष माघके ठण्डीम छटपटैना, शिक्षारुपी दीयाके प्रकास नै पाक अन्धकारम जहोंर तहोंर भहरैना, औषधि उपचार नै पाक रोगके कीरा हुकनके शिकार बन्ना, असुरक्षाके कारण पापीनके शिकार बन्ना जनतनके लाग गास, बास, कपास, शिक्षा, स्वास्थ्य और सुरक्षाके ग्यारीण्टी दिह सेक, ऐसिन प्रजातन्त्र जनता चाहलबा। ऐसिन प्रजातन्त्रके प्राप्तिके लाग जनता क्रान्ति कर्ल। तमाम वीर हुक जेल गैल नेल खैल। तमाम वीर शहीद हुक आपन अमूल्य जीवन गवैल। प्रजातन्त्र आईल केकरलाग? जे भाषण कर सेकथ, जनतन दबाई सेकथ। वाकर लाग प्रजातन्त्र आईल। जे धनवान बा ओंकर लाग आइल गरीवनके लाग प्रजातन्त्र कहलक का हो, कौन चीजके नाम हो थाहा नै हो। करताल ध्वनिके साथ तालो बजथ बीच बीचम।

सौनी आग बोलथ- "आज महान प्रजातान्त्रिक मुलुकके रुपम भारतहन नमूनाके रुपम लेथ, जौन देशम एक ओर तमाम गास, बास, कपास; स्वास्थ्य, शिक्षा और सुरक्षा के अभ वम छटपटाइल बाट। लाखौं घरबार बिहिन जनता प्लेटफार्म पुल और रुखुवाके शरणम रात बितैथ। नङ्गत भुखके आगी बुताईकते सडक और मन्दिरके आस पास बाबूजी दो पैसा कहती भिक्षाके लाग दुःखी हात पसर्थ। तमाम निरक्षर जनता शिक्षाके प्रकाशसे बञ्चित होक जहोंर तहोंर

भहरैथ। तमाम जनता औषधि उपचार नै पाक अकालम आपन ज्यान गुमैथ। तमाम चेलीबेटी हुक बेरोजगारीके कारण आपन इज्जत बेचक बेश्यालयके सरणम पर्थ कलसे दोसर ओर डालमियां टा टा बिरला जैसिन पूंजिपती उद्योगपतिफे भारतम बाट। वेसिन प्रजातन्त्र हमन आवश्यक नै हो।

वैसिन प्रजातन्त्र मानव समाजम अशान्ति अराजकता सिवाय कुछ नै लान सेकथ। अपन हुक बहुत गौरसे दुनिया के गतिविधि हेरीत। दुनियाम आज का हुइती बा। एक ओर तमाम जनता गास, बास, कपासके लाग छटपटाईल बाट कल से दोसर ओर सम्पत्तीके फैलाव और सुरक्षाके लाग छटपटाईल बाट। एक ओंर भुख लागल कहके नै मिलत कलसे दोसर ओर आणविक अस्त्र शस्त्रके होडवाजी चललबा। यी सब का हो? पूंजीवादी समाजके देन! करतल ध्वनिके साथ ताली बजथ वीच बीचम।

सौनी आग बोलथ- "समाजम आज का हुइती बा? ठाउँ ठाउँम पार्टी पार्टीके बीचम लडाई, झगडा, गुण्डा गर्दि, डकैती, यहातक कि इकहल दुकहल नेङ्गना, घुम्नाके डर हो गैलबा। तमाम दरुहा, जुवारी गुण्डनके रजाई बातिन। अक्केल नै हो कि तमाम सोझा चेलीबेटी हुक भारत बेश्यालयम बेच्वा पैतीबाट। यी सब काहो पूंजीपति समाजके देन। पूंजीवादके देन। बहुत जोरसे ताली बजथ।

सौनी आग बोलथ- "हम्र सही प्रजातन्त्र प्राप्तिके लाग आपन हक अधिकारके लाग संघर्ष कर्ना जरुरी बा। जबतक हमार देशम सही प्रजातन्त्रके प्रादुर्भाव नै हुह तब सम वीर शहीद हुकनके सपना साकार हुईलक नै ठहरी। वीर शहीद हुकनके रगत हमन सरापी। आग कहथ-

प्यारा जनसमुदाय मै एकथो गीत सुनैना अनुमति चाहटुँ । अनुमति सूचक ताली बहुत जोरसे बजथ । सौनी बहुत आर्कषित स्वरम गीत सुनाईथ । गीतके बोल ऐसिन रह... ...

उठोमोर गरीब किसान, अत्याचार सहक नैबैठो ।

दिन रात काम कैक खाए नही पैना
सद्‌भर एकजोर लुगम पिउँदा लगाइ पर्ना
खैना नैंहो पिना नैहो लुगा फाटा
शिक्षा नैहो दीक्षा नैहो नैहो सुखशान्ति ।
उठो मोर ... ...

दिनभर काम कैक सामन्तिनह पल्ना
तिहुँमफे हुकहिनसे गोरू कव्हा पैना
ऐसिन अन्याय अत्याचार हम्र कसिक सहना
उठी जागी हम्र आबत लागी एक साथम ।
उठो मोर ... ...

अत्याचारीहुक हमार खुन पियक्ते
देखती बाटी च्बाला फेर्थ वेला मौकाम
हम्र हुबेन्क फटाहीके करी भण्डाफोर
कहाँसम सहनाहो उठी मचाई स्वर ।
उठो मोर ... ...

सिधा साधन फसाइक्ते कता जाल बिन्ल
कौनों खोलल रा प्र. पा. कौनो कांग्रेस बन्ल
यी जालम पर्बित हम्र पैना दुःख पंबी
एक होक चिथी जाल नैत हम्र गैली ।
उठो मोर गरीब किसान, अत्याचार सहक नैबैठो ।

बहुत करतल ध्वनिके साथ ताली बजथ । सौनी आग बोलथ- "अन्तम मै अपन हुकन आपन ... .. अभिवादन देती विदा चाहटुँ । लाल सलाम ! करतल ध्वनिके साथ ताली बजथ । नारासे बातावरण गुञ्जायमान हुईथ । नारा ऐसिन रह –

एकजान – सच्चा प्रजातन्त्र । जनसमूह – अवश्य लन्बी !
एकजान – कालाबजारी, भ्रष्टाचार । जनसमूह- नियन्त्रण कर !
एकजान – गास, बास, कपासके । जनसमूह – ग्यारिण्टी कर !
एकजान – वीर सौनी । जनसमूह – जिन्दावाद ! आदि नारा से आस पासके बातावरण गुञ्जायमान हुईथ । नाराके आवाज सुनक जहोंर तहोंरसे जनता खचाखच भरती रथ ।

यह बातावरण कालुरामहन असह्य बना देथस । उ रीससे चुरहोंक दाँत पिस्ती आपन सहयोगिनके साथ आपन घर ओर प्रस्थान करथ । उ आपन बहुत भारी पराजय सोचथ । आब कालुराम सौनो बाँचल रहतसम आपन असफलताके निश्चित देखलागथ । आब सौनीह खतम कर्ना षडयन्त्र रचना ओर ध्यान देहथ । उ आपन भूमिगत टोलीके गुण्डन बलाक निर्देशन दिहथ- "बहुत सावधानसे सुनो भैयों ! सौनी हमार बहुत भारी दुश्मण रुपम देखा परलबा । सौनी बाँचत सम हमार भण्डाफोर कर नै छोरी । जब उ भाषण देहतत सारा जनता ओहीसे प्रभावित होजैथ । उ बाँचतसम मै चुनावम नै जित सेकम वह ओरसे तुह्र रातम जाक सौनीक घाँटीह डौरीले कसक मारदारो । और ओकर द्वारीम टङ्गादेव । सरजिमीनम सौनी आत्महत्या करल कैक हम्र सबजाना बयान कर परी ।

कालुरामके निर्देशानुसार कालिया, रणजीत और विहारी हाथ हथियारसे सुसज्जीत होक रातके एक बजे सौनीक

घर ओर प्रस्थान कर्थ। दिन भरके थकाईके कारण सौनी और ओकर भैया असारू निद्रा देवीके बहुत दंदुर क्वारम आराम करथ। कालिया, रणजीत और विहारी बहुत सुस्त सौनीक कोठामें प्रवेश कर्थ। सौनी और असारू बहुत मीठ निद्राम रह। यह मौकाम कालिया सौनीक मुहम बहुत जोरसे लुगाके बूजा लगादेहथ। रणजीत घाँटीम शास लिह नै सेक्ना कैक पकरथ विहारी हलबल करनै देक दब्बातथ। सौनी बहुत जोरसे झरफराइथ। ओकर ग्वारा असारूक पेटम पथिस। असारू बहुत जोरसे चिलाईथ। दिया बारक हेरथ तब देखथ तीन जान नरपीचास कालिया, रणजीत और विहारी आपन दिदीह दबोत्ल। उ छुड़ैना बहुत प्रयास करल लेकिन तीन तीन जान नरपीचाशनके बीचम एक जान लडकक कुछ नै लग्थिस। विचारी सौनी कबुनै घुम्ना कैक यमराजके पहुनी बनगैल। विचरा असारू तीन जान नरपीचाशनके सामने आँस बहैना सिवाय कुछ कर नै सेकथ।

कालिया रणजीत और विहारी धम्कीके साथ असारू हन कहथ "कान खोलक सुनरै! तोर दिदी आत्महत्या करल कैक कहस। यदि हमार पोल कौनो हालतम खुलीत तोरफे यह हालत हुई विचरी सौनीक लास एकथो डोरीम बाँधक तीन जान नरपीचाश हुक द्वारीम टंगाक कालुरामके घर ओर प्रस्थान कर्ल। कालुराम आपन गुण्डनके प्रतीक्षाम रह। गुण्डन ओकर घरम प्रवेश कर्ी साइत बहुत उत्सुकताके साथ पुछथ "काम ठीक कैलोरै? काम सफल हुइलक ओरसे तीनो गुण्डा एक सोरमें कथ जी हाँ। कालुराम स्वाबासी देती तीनौ गुण्डानके पीठ ठठाइथ और कहथ - वा! बहादुर वा! और कहथ - खाओ पिओ, खुब खाओ और मोज करो

भैयौ। आग कहथ- "का सरजिमीन जरुर हुई। हम्र सबजान जाक सौनी आत्महत्या करल कैल बयान करक परी।

बिचारा असारू एक त दाई बाबक प्यारसे बञ्चित रह। याकरलाग दाई बाबा दादु भैया, दिदी बहिनी कना उह सौनी रलहिस एक मात्र ओकरलाग। पथ्थरके आत्मा हुईलक कालुरामके नरपिचाश गुण्डनके शिकार बनगैल सौनी। आब बिचारा असारूक यह पापी दुनियाम कुई फे नै रह गैलस। एक घची त असारू बहुत जोरसे रुईथ लेकिन वाँकर पुकार सुन्देहुईया कुईनही रलहिस। यह दुःखसे भरल असारू रह। एका एक असारूके रुवाई बन्द होजैथिस। उ सम्झथ सौनीक उह शब्द ',भैया मै बँचम त त्वारलाग, तोहीहन समाज के कर्णधार बनाक छोरम।" असारू मन मन बरबराईथ आपन दिदीक सपना जरुर पूरा करम।

असारू सरासर मोहनके घर ओर प्रस्थान करथ। भरखर मुर्गा बिहानके सन्देश लेक बोलल रह। मोहनके घरम पुग्नासाथ यथार्थ हत्याकाण्डके विवरण सुनाईथ। बहुत दर्दनाक घटना सुनक दु ख सुख भोगक खपीस हुईलक मोहनके आँख से आश्रुधारा रुक नै सेक्लस। बोंल्ना कोसिस कर्लसेफे शब्द घाँटीसे बाहर निकर नै सेक्थिस। बल्ल बल्ल आत्म संयम कैक असारुह कहथ- "भैया असारू यी दुनियाम पापीनके रजाई बाटिन। गरीबनके आवाज सुनदे हुइया कुई नैहो। लेकिन भैया हम्र वीर शहीद सौनीक सपना जरुर पूरा करक परथ। आब हम्र रोक कुछ काम नैहो। तुरुन्त जाक डि. एस. पी. कार्यालयम घटनाके विवरण साथ निवेदन दिहक परल।

मोहन और असारू डि. एस. पी. कार्यालयम जाक घटनाके विवरण साथ निवेदन देथ। डि. एस. पी. के

आदेशानुसार अ· स. ई. मोहन जोशी सरजिमीन कर आईथ। बहुतसे जनता बयान देहकलाग उपस्थित रथ। अ. स ई. कालुरामसे बयान लेहथ- "हजुर (कालुराम) यस एरियाको सर्वमान्य व्यक्तिको हौसियतले यो घटना कसरी घटेको हो लेखाई दिनुहुन अनुरोध गर्दछु।" कालुराल बयान करथ- "सौनीको परिवारमा उ र उसको भैया असारू सिबाय अरू कोही थिएनन्। उनीहरूका आमा बाबु उनीहरू सानै छँदा वितीसकेका छन्। त्यो परिवार ज्यादै गरीब परिवार हो। सौनो युवती भै सकेकी थिई। उसको चरित्र पनि संकास्पद भएको हुनाले कसैसंग पनि उसको विवाह हुन सम्भव थिएन। त्यसै कारणले उ आत्महत्या गरेकी।" यह प्रकारले कालिया, रणजीत और बिहारीफे आपन आपन बयान लिखैथ। सरजिमीन एकलौटी हुईथ। मोहन और असारू बयान देना बहुत प्रयास कर्ल लेकिन कालुरामके दवावसे बयान देह नैपैल। बयान देना कैक बहुतसे जनताके उपस्थिति रह लेकिन कुइ फें देह नै पैल। सरजमीन अनुसार सौनो आत्महत्या करलक ठहरल।

उपस्थित जनसमूह उत्तेजित हुईत देखक अ. स. ई. मोहन जोशी तुरन्त डि. एस. पी. कार्यालय ओर प्रस्थान करथ। कालुराम फे आपन सहयोगिनके साथ आपन घर ओर प्रस्थान करथ। असारू सौनीक पार्थिव शरीरम कपडा ओढ़ादेहथ। हजारौ जनता सौनीह श्रद्धाञ्जली अरपण कर जमा हुईथ। सौनीख पार्थिव शारीर फूला और अबिरसे छोप जैथिस। हजारौ नरनारी सब यातामा भाग लेथ। नारा बहुत जोरसे लागथ। नारा ऐसिन रह –

एकजान – हत्यारहन । जनसमूह – मस्थी · मस्थी !
एकजान – गुण्डागर्दी हत्या। जनसमूह – नियन्त्रण कर !

एकजान – हत्यारनह। जनसमूह – फासीदे !
एकजान – वीर सौनी। जनसमूह – जिन्दावाद !
एकजान अमर शहीद। जनसमूह – अमर रहही !
सारा नरनारीनके आँखसे आँसुके धारा बहल रथिन। सब जान योह सोच्थ कि कालुराम जैसिन नरपीचाशनके बिया रहत सम यी दुनियाम सिधा - साधा गरीबनके भलाई नै हुई।

बातावरण बहुत करुणादायक देखापरथ। आत्मा बहुत सह्मालक आँस पोछती असारू उठथ और गरिया (चिहान) कोर्ना शुरु करथ। ओकर पाछ दोसर मनै कोर्क काम पूरा कर्थ। आब सौनोक पार्थिव शरीर गरियाम धकलक अन्तिम श्राद्धाञ्जली स्वरुप प्रत्येक सब यातीहुक माटी देथ। डफनैना काम पूरा हुईथ।

असारू जुरुवक उठक सौनीक गरियक माटीक धुरके टीका लगाईथ और कहथ- दिदी मै आज तोहार गरीयक माटीक धुरके टीका लगाक योह प्रतीज्ञा करटुँ कि तोहार सपना पूरा नै करत सम मै नै मुअम। आज तुहार योह भैया असारू अक्कहल नैहो। तुहार लाखौं दादु भैया दिदी बहिन्या हुक जन्म लेसेकल बाट। तुहार सपना साकार नै करत सम और यी दुनियाम नरपीचाशनके बिया रहत सम संघर्ष कर्ना प्रतीज्ञा कर्ती तोंहार गरीयक माटीक धुरीक टीका लगैल।

जब सम हमार देशम पूरा मानव अधिकार नै आई जनताके गास, बास, कपास, स्वास्थ्य, शिक्षा और सुरक्षा के ग्यारिण्टी देह सेक्ना प्रजातन्त्रके स्थापना नै हुई तब सम दिदी तोहार सपना साकार नै हुई। तोहार सपना पूरा

कर्ना और हत्यारा कालुराम और ओकर गुण्डन कालिया, रणजीत और बिहारीह जन अदालत समक्ष प्रस्तुत कर्ना प्रतीज्ञा करटुँ दिदी । प्रतीज्ञा ! प्रतीज्ञा !! प्रतीज्ञा !!!

फेर नारा लागथ –

वीर सौनी – जिन्दावाद !

वीर शहीद – अमर रहही !

कथाकार :— टेक बहादुर चौधरी
सौंडियार गा. वि स.
सिसहनिया

छिटो, छरितो, सुद्ध, आकर्षक छपाई सम्बन्धि सम्पूर्ण कामको लागि सम्झनुहोस् स्वर्गद्वारी प्रेस दाङ घोराही
त्रि. न. न. पा. ११
फोन न. ६००८२

जागो रै किसनबा

मङ्गल चौधरी
अम्राई दाङ

हरक फह्नी घोटक प्रति जमीन फुटैलो ।
खडेरी - झरी सहकफे फसल लगैलो ।।
मल जल डारक डिहोहन मलगर बनैलो ।
तफेन किसान ! आपन कमाही कहा पैलो ।। १

घाम - पानीम मेहनत कैक धनवाली फरैलो ।
काट्क झमरी फाँर्क डिहुवाह समथर बनैलो ।।
कुल्वा - मुरा कर[2] - लदीयाह शुन्लो ।
तफेन किसान प्याटभर खैना कहा पैलो ।। २

चाहे जाँर चाहे गर्मी, चाहे असारके झरीम ।
हाँत - ग्वारा स-यागैल बर्षाके हिलम ।।
बाघ - भालसे लर्क किसान यी ठाऊह बैठैलो ।
तफेन किसान ! एक छिउटी जग्गा तुह्र कहा पैलो ।। ३

फाँटल टोपी देखैयो चुट्टी फाँटल लुगाबा ।
अभाव नाना उदास खाना, छातीम धुजाबा ।।
दुःख ओ दर्द सहकन किसान यो समाज बनैलो ।
तफेन किसान ! बैठना झोप्री तुह्र कहा पैलो ।। ४

धानक ब्वारा उठैथा छावा लैजैठा औरज ।
ब्याजक स्याज जिम्दारवह देक हुईथु मै दिक्दार ।।
स्कूल - कलेज, पाटी व धारा तुह्रहे बनैलो ।
तफेन किसान ! पढ़ना - लिखना तुह्र कहा पैलो ।। ५

जे जे त जोत्था उह - उह खैथा, बचन बुझकन ।
उठो रै उठो ! जागो रै किसान एक जुट होकन ।।
तोर देहबो सामन्ती नीति व सरल संस्कार ।
संघर्ष कर्लसे भग्ने बा क-या अँधार ससार ।। ६

आब आ गैल[२]

महेश चौधरी
बैंवाड दाङ

आब आ गैल[2], संघर्षशील दुनिया ।
दिदि - बाबु काकर बण्टो, घर भित्तरके रनिया ।।१।।
और देशके जन्नी मनै, थारुनके संग
वकिल, डाक्टर बनल देखक, हम्र पर्ति दग।
दंग पर्क नै बन्ने हो; बदल दारी दुनिया ।।
दिदि - बाबु काकर बण्टो, घर भित्तरके रनिया ।।२।।
लौरा भर स्कूल जैना, जन्नी कर्ना भन्सा ।
दाई बाबक सम्पत्तिम, नै हो तुन्हक अंशा ।।
भन्सा कैक नै बन्ने हो, स्कूल जाए चहता ।
दिदि - बाबु काकर बण्टो, घर भित्तरके रनिया ।।३।।
शिप बुट्टा कुदथो तुह्र, डेल्वा ढ़क्यामन ।
कैदिसक बाचल रहथो, थरुवक घरमन ।।
कैदिसक नै बन्ना हो, ह्यार परल दुनिया ।
दिदि - बाबु काकर बण्टो, घर भित्तरके रनिया ।।४।।
जन्नी थारुके भावना मेटक, एक व्हाए पर्ता ।
हाथम - हाथ मिलाकन, संग न्याङ्ग कहता ।।
शोषित - पीडित महिलन्के, महिला मुक्ती चहता ।
हस्या - ठोक्याक झण्डक तर, एक जुट व्हाए परता ।।
दिदि - बाबु काकर बण्टो, घर भित्तरके रनिया ।।५।।
सामन्तीके बान्धल, बन्धन्ह मील्क टुर परता ।
हाथम हाथ मिलाकन, आग्घ बढ़ परता ।।
मील्क टुर परता[2], महिला मुक्ती चहता ।
आब आ गैल[2] संघर्षशील दुनिया ।
दिदि - बाबु काकर बन्टो, घर भित्तरके रनिया ।।६।।